दाद उस के नाम लिख दी है, वह उसे हमारे नाम लिख देवे। और यह तो हक़ीक़त भी है कि अपनी चीज़ पर हमारा इख़्तियार है, जिस को चाहें उस को दे डालें। मैं गवाही दे दूंगा?

हेमन०। (जी में) न मालूम तुम क्या गवाही दोगे, अपना सिर या मेरा सिर? हमें क्या है, हमें तो रुपये से काम। जैसे कहो वैसे मुक़द्दमा चलावें। (प्रकाश) इतने दिनों से आप ने नालिश क्यों न की थी?

शम०। यही इस तरह के झगड़े झंझट के सबब से फ़ुर्सत न मिली। अलावह इसके, जल्दी करने की कोई ज़रूरत भी न थी।

हेमन०। मगर हुज़ूर, इस मुक़द्दमे में ख़र्च बहुत पड़ेगा।

शम०। कुछ परवाह नहीं। जितना ख़र्च हो, होने दीजिये, मैं सब दूंगा।

हेम०। तो भी सुबूत होना मुश्किल है। मगर मुझ से जहां तक कोशिश बन पड़ेगी करूंगा, क्यों कि आप हमारे पुराने मवक्किल हैं। और मुवक्किल कहिये तो और मुरब्बी कहिये तो जो कुछ हैं सो आप ही हैं। क्यों जनाब, मियां सज्जाद आज कल हैं कहां?

शम०। वह यहीं पटने में हमेशा रहता है। ख़ैर तो मैं इस वक़्त जाता हूं, लेकिन मुख़्तार साहब आप भी इधर मुक़द्दमा जल्द ही दाग़ दीजिये, समझे न?

हेमन०। बहुत ख़ूब, मगर देखिये ख़र्च की मदद में कुताही मत कीजियेगा।

[शमशेर बहादुर का प्रस्थान।

हेमन०। ऐं, बीबी महमूदा अपनी जायदाद इनको दे गई हैं मुझे तो यह यक़ीन नहीं होता। झूठी गवाहियां दिलवायगा और क्यों-? मालूम होता है जाल भी करेगा। मगर वकीलों की जिरह से बच जाय तब जानें।—मियां सज्जाद को ख़बर दे देनी चाहिये। इधर से तो ख़ूब मिलहीगा, देखूं, उधर भी क़िस्मत आज़मा लूं, कुछ मिल जाय तो मिल जाय। लड़ाई के होने हो से कौओं और गिद्धों की क़िस्मत जगती है। हा-हा-हा।

[गया

चौथी झांकी।

अंधेर, सज्जाद का मकान।

(अब्बास बैठा है।)

अब्बास। यहां आये मुझे सिर्फ़ एक महीना हुआ है लेकिन इतने ही में मुझे यह अपना मकान सा मालूम होने लगा। सब ही मुझे प्यार करते हैं। मख़्सूस सुम्बुल मुझ पर ऐसी मिहरबानी की नज़र रखती है, कि अपनी सगी बहन भी इतनी न रखती होगी। औरतों का मिज़ाज न मालूम क्यों आप ही आप इतना नरम होता

है। मगर लड़कपन में व्याह न कर के ज़ियादे उम्र तक लिखने पढ़ने से औरतों की कैसी अच्छी हालत हो जाती है, यह बात जिसने सुम्बुल को नहीं देखा, वह नहीं कह सकता। जब तक कोई चीज़ आंखों से नहीं देखते हैं, तब तक यक़ीन नहीं होता। लोगों का यह ख़याल कि औरतों का पढ़ाना लिखाना अच्छा नहीं, न मालूम कब दूर होगा।—सुम्बुल पर हमारा क्या ख़याल है?—मुहब्बत, ताज़ीम, इहसान। मगर कशिश-इ मक़्नातीस किधर है?—दूसरे पर। दिल अपना अब बेहाथ हुआ चाहता है। (सिर नीचा किये बैठना।)

(गुलशन का प्रवेश।)

गुल०। (जी में) माशाअल्लाह, यह गौर! आज कल देखती हूं इसी तरह दिन रात गौर करते रहते हैं। रहो, मैं इन्हें छकाती हूं।

(गुलशन का प्रस्थान, और फिर छिपे छिपे
थोड़े पटाखे लाके अब्बास के कान के
पास अचानक से छोड़ना।)

अब्बास। (डर से चौंक के, और खड़े होके) हुं-उं यह क्या! (गुलशन की तरफ़ देख के और शर्मा के) आप थीं?

गुल०। क्या हुआ, क्या हुआ? डरे क्यों? तुम जो इस तरह एक बारगी चौंक उठे, उस से मुझे मालूम हुआ कि तुम ने कोई भूत जिन तो नहीं देखा?

अ०। वाह, आप अचानक से कान के पास पटाखे छोड़ें, और मैं चौंकूं नहीं?

गु०। (डरावनी आवाज़ से) हां देखो, उस पेड़ पर एक भूत रहता है। मैं कहूं, शायद तुम्हें यक़ीन न हो, वह तीन ताड़ लंबा है और दोनों हाथ दोनों तरफ़ लंबे लंबे बांस से अलग लटकते हैं और जब किसी को देखता है, तो पकड़ने के लिये उस पर टूटता है। (हाथ से दिखला के) शाम को या रात को या ठीकठीक दो पहर को तुम वहां मत जाना। समझे? क्या जाने, ख़ुदा न ख़ास्त तुम्हें भी कहीं वह देख लेवे।

अब्बास। (जी में) इसी अब कौन सा जवाब दें?

गु०। अच्छा, तुम क्या ग़ौर कर रहे थे?

अ०। किस वक़्त?

गु०। अभी जब कि मैं इधर आई थी।

अ०। कहां, कुछ तो नहीं।

गु०। क्यों जी, इस की क्या वजह कि तुम लोग इधर कई दिनों से अकसर कुछ सोचा करते हो, और सदा उदास रहते हो। आपा की भी यही हालत है।

अ०। क्यों, आप क्या कभी कुछ सोचतीं साचतीं नहीं?

गु०। क्यों, तुम इतने दिनों से यहां हो, तुमने कभी देखा है?

अ०। अच्छा फ़र्ज़ कीजिये कि अगर आप के भाई बीमार हो जावें, तो क्या तब भी आप उन के लिये सोच न करेंगी?

गु०। क्यों, क्यों, वह बीमार हैं क्या?

अ०। नहीं तो! (आह भर के) मैं अमीर होता तो क्यों ख़ूब होता!

गु० । (उत्कंठित भाव से) तुम्हें ज़रूर कोई न कोई तक्लीफ़ है । तुम्हें क़सम अल्लाह की मुझ से कहो क्या बात है । क्या किसी नोकर ने तुम्हारी कोई बात नहीं सुनी है ? या और कोई बेअदबी की है ? क्या बात है, मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूं, कहो ।

अ० । (आंख में आंसू भर के) मियां सज्जाद और तुम लोगों की मिहरबानी से मुझे इस तरह की कोई तक्लीफ़ नहीं है । मैं यहां हर तरह से खुश हूं ।

गु० । फिर तुम्हें फ़िक्र किस बात की है ? भाई, मुझे सच सच कह दो ।

अ० । आप यह सुन के क्या करेंगी ?—और कहां, मुझे तो कोई फ़िक्र नहीं है ।

गु० । भला, ख़ैर तब भी कहो सही । मुझे ख़ौफ़ इस बात का है कि अगर कहीं भइया ने सुन पाया कि तुम्हें किसी तरह की यहां तकलीफ़ है तो वह हमलोगों पर बड़े ख़फ़ा होंगे ।

अ० । तो क्या आप ज़रूर ही सुनेंगी ?

गु० । हां, हां, वल्लाह कहो । एक बात और है तुम मुझे "आप" "आप" मत कहा करो ; मुझे यह सब नहीं अच्छा लगता ।

अ० । अच्छा मैं पहले आप को न-न-नहीं तुम को एक क़िस्सा सुनाता हूं, सुनो । पटने के पास किसी गांव में गुलाम हुसेन नाम एक शख़्स रहते थे । उन्हों ने सौदागरी कर के कुछ रुपये पैदा किये थे । उन्हें सिर्फ़ एक छोटा सा लड़का था । उस का नाम यारमुहम्मद था । गुलाम हुसैन मरती वक़्त अपने लड़के को और रुपयों

की एक दोस्त के यहां रखते गये। उन्हों ने अपने दोस्त से कहा "दोस्त, मैं लड़का अपना तुम्हें दे के चला। उसे आदमी बनाइयो। और जब आलिग़ होतो हमारा हाल कह देना, और रुपया पैसा, जो कुछ है, समझा देना। (आंसू का आंखों में भर आना।) मगर उस दोस्त ने नमक हरामी और दग़ाबाज़ी की। रुपयों को तो अपने काम में ख़र्च कर डाला और यार मुहम्मद जब जवान हुआ, तो उसे मकान से निकलवा दिया। वह बेचारा लड़का सैंकड़ों मुसीबतें झेलता, भटकता भटकता शाहिदहुसैन नाम एक भले आदमी की पनाह में आया! शाहिदहुसैन ने इन्हें बहुत ही अच्छी तरह से रक्खा, और वह उस लड़के को ठीक अपने छोटे भाई के बराबर मानते थे। मगर क़िस्मत की ख़ूबी, यार मुहम्मद की तकलीफ़ ने यहां भी सताने से न छोड़ा। यानि शाहिदहुसैन की जुबैदा नाम कुआंरी बहन जो थी, उस पर वह आशिक़ हो गया। मगर जुबैदा उसे नफ़रत की नज़र से देखती थी। यही पहला मरतबा था कि यार-मुहम्मद मुहब्बत के फंदे में फंसा था। ज्यों ज्यों मुहब्बत बढ़ने लगी त्यों त्यों तबियत उसकी बेक़ाबू होती चली। मगर दिल की बात कहीं ज़ाहिर भी नहीं कर सकता था। क्यों कि वह खुद तो एक अदना उड़ता फिरता मुसाफ़िर था, और उस पर भी ग़रीब, और जुबैदा तो माशाअल्लाह एक बड़े आदमी की बहन थीं। ग़रज़ कहने की हिम्मत न होती थी। आख़िरकार मौत ने यारमुहम्मद को इन तकलीफ़ों से रिहाई दिलवाई। (आह भरना।)

सु०। वह एक बार कह के इमतिहान ही लिये होते।

शाहिद हुसैन की तो भला इस की ख़बर दिये होते। जिन की तारीफ़ तुम ने इतनी की, वह भी क्या ऐसी बेवक़ूफ़ी की राह देते कि यारमहम्मद की, ग़रीब होने की वजह, अपनी बहन से न व्याह देते? सब ही दौलत की परस्तिश नहीं करते।

अ०। यार मुहम्मद में कोई बात भी ऐसी नहीं थी कि जिस की वजह से उस की लोग ख़ाहिश करें। और फ़र्ज़ किया कि कोई बात ऐसी होती भी, और शाहिद हुसैन की भी राय हो जाती, मगर शायद ज़ुबैदा व्याह करने को राज़ी न होतीं?

गु०। (नीचा मुंह कर के, अस्फूट स्वर से।) मुझे तो मालूम होता है कि उन के भइया को मन्ज़ूर होता तो वह भी राज़ी हो जातीं।

अ०। तुम्हें क्या यह ठीक मालूम है? तुम यक़ीनन कहती हो।

गु०। मैं ठीक नहीं कह सकती, मुझे ऐसा मालूम होता है।

अ। (आह भर के जी में) जो उम्मीद बंधी थी वह भी गई।

गु०। वाह वा, यह क्या? तुम ने अपना हाल तो कुछ कहा ही नहीं। सिर्फ़ एक क़िस्सा सुना दिया।

अ०। (गुलशन के मुंह की तरफ़ कुछ देर तक देखना, और फिर अचानक से हाथ पकड़ के। गुलशन—

(एक नोकर का डरते डरते प्रवेश और अब्बास का गुलशन का हाथ छोड़ देना।)

अ०। क्यों रे, तेरा मुंह क्यों इतना सूख गया है? ख़ैरियत है न?

नौकर। मीयां कहते मेरा बदन सिहरे है। (कांपना)

अ०। कह तो सही, क्या है क्या ?

नौ०। मीयां, हम मसजिद की डेवढ़ी पर बैठे थे कि एक मुस्टंडा नाटा खोंटा काला सा आदमी हाथमें लाठी लिये हम से आ के पूछिस कि "अरे, मीयां अब्बास हुसेन नाम के कोई आदमी यहां आके रहे हैं ?" हम कहा "हां, रहे हैं तो।" तब फिर पूछिस कि "थोड़े ही दिन उस के आये की हुआ है न ? दुबला पतला सा है।" हम कहा "हां।" तब हम उलट के पूछा कि "काहे जी तुम उन का हाल काहे को पूछी हो।" तब कुछ जवाब नहीं दिहिस, और कटमटा कटमटा मेरे तरफ देखे लगा। और जब जावे लगा तब अपने जी में गुन गुना के क्या कहिस कि "हूं हूं बचा का पता लग गया। अब कहां जाने पावे है ?" यह सुन के हम को बड़ा डर हुआ, और येही कहे को हम दौड़े चले आवे हैं।

सु०। यह क्या, तुम्हें कोई दुश्मन भी है ?

अ०। (जी में) यह तो मैं देखता हूं शमशेर बहादुर का कोई भेदिया है। उसी ने ज़रूर कोई फांदा लगाया है। मुझे फंसाया चाहता है। बड़ा डर मालूम हो रहा है। (प्रकाश।) अच्छा ज़रा मुझे दिखला तो दे कि वह आदमी गया किधर। तू क्यों नाहक डर रहा है ? (गुलशन से) तुम ऊपर जाओ, मैं अभी आया।

गु०। देखो, हमारी बातें सुनो, तुम मत जाओ, और किसी आदमी को भेजो।

अ०। नहीं, ख़ौफ़ क्या है ? देखो मैं अभी पहुंचता हूं।

गु०। अल्लाह, तूही मालिक है। ख़ैर, मगर देखो किसी आफ़त में मत पड़ना। जल्दी आइयो।

[सब का प्रस्थान।

पांचवीं झांकी।

बिहार, अंधेर, सज्जाद का मकान।

(सुम्बुल बैठी है, हुसैनी का प्रवेश।)

सुम्बुल। तुम लोगों के आने की ख़बर तो शाम ही को थी, फिर इतनी देर क्यों हुई ?

हुसैनी। बीबी ! हम का कहें ? हम तो जाने हैं सज्जाद मीयां के ऐसा आदमी दुनिया में कभी जनम नहीं लिहिस होगा।

सु०। (हंस के) क्यों क्यों ? भला कैसे ?

हु०। मीयां आवे खातिर कल तीने बजे सपर चुके थे, बलुक इस्टीटन में भी जा चुके थे। इस्टीटन में पहुंच के ज्योंही मीयां टिकस मोल लेवे को बढ़े हैं, त्यों ही क्या देखिन कि एक निगोड़ी बुढ़िया भोकार पाड़ के रो रही है। मीयां उस के पास जाके पूछिन कि

"काहे रोवे है, बुढ़िया ?" तो बुढ़िया जवाब दिहिस कि "बाबू हम …वे में एक कायथ कने नौकर हैं, आज चिट्ठी आई थी कि हमरा छोटका बेटवा बड़ा बेराम है, ओही सुन के गिर्थाइन से छुट्टी लेके, हम अपने गांव पर जायें खातिर हीयां आये थें: एक आदमी को हम टिक्कस लावेला रुपइया दिया, सो ऊ रुपइया लेके भाग गया। सो रुपइवा गया तो गया रेल खुल जायगी तो आज हम अपने बेटवा को कैसे देखेंगे।" ई सुन के मीयां क्या किहिन कि एक टिक्कस मोल लाके उस बुढ़िया को दिहिन, और कुछ रुपया दे के कहिनि कि "ले इस से लड़के के लिये दवा मोल लेना।" बुढ़िया तो मीयां की ई मेहरबानगी देख के नेहाल हो गई, उन का पैर पकड़ के रोवे लगी, और बहुत दोवा देवे लगी। और कहे लगी कि "बेटा, तुम जुग जुग जीयो, तुम एक से इक्कीस हो। तुम्हें सोने की कलम दवात हो। बेटा तुम ही ने मुझे इस बेले बचाया।" मीयां किसी तरह समझा बुझा के उस से जान छुड़ाइन। और जब चले लगे तो उन के आंख में आंसू डबडबा आया। बीबी ई का तुमरे आंख में भी आंसू भर आया !

मु० । (तुरत आंसू पोछ के) वाह, मेरी आंख में आंसू कहां है रे ? खैर तो कह फिर उस के बाद क्या हुआ ?

ह० । फिर इसके बाद क्या होगा, पास में एक फूटी कौड़ी न रही, कि जिससे टिक्कस लेते। झाड़ बुहाड़ के सब उस बुढ़िया को दे दिहिन था। लचार घर फिर गये। उस के बाद फेर आज रेल पर सवार हुए, १२ बजे के अंदाज़ बखतियारपुर पहुंचे, और वहां के चले चले इस बखत चले आवें हैं।

सु० । मैं नहीं जानती थी कि तेरे मियां ऐसे हैं। और तो यहां आके फिर गये किधर ?

हु० । का जाने किस से जो बात कर रहे हैं। अच्छा बीबी तुम उस दफ़े कही थीं कि मैं दूसर बार पढ़ने से ही आवेगा, तब हम अपना सब हाल कहेंगे, सो कहो न अब, बीबी ।

सु० । तुम को अभी तक याद हो है ? अच्छा सुन। हमारा मीरदाद में मकान था। मैं जब नौ ही बरस की थी, तब बाबा ने इन्तक़ाल किया। उन्हीं के अफ़सोस से अम्मा हमारी बीमार हुई। बाबा ने अपनी ज़िन्दगी में कुछ क़र्ज़ किया था, कि जिस के लिये उन के मरने का हाल सुनके महाजनों ने तक़ाज़ा करना शुरू किया। जब उन लोगों ने बहुत दिक़ किया तो अम्मा ने मियां सज्जाद को बुलवा भेजा, और कहा "बेटा हमारी यह हालत है, और महाजनों ने तो और भी नाकोदम कर डाला है। हमारे यहां कोई मर्द न रहा, मैं किस से कहवाऊं, ज़रा तुम ही महाजनों को बुलवा के सम- झा दीजो कि कुछ रोज़ और दम लें, मैं चंगी हो जाऊं तो मकान ज़ेवर बेच कर सब का क़र्ज़ अदा कर दूंगी।" मियां सज्जाद ने कहा "कुछ परवा नहीं, आप किसी बात की फ़िक्र न करें। वह रहीम है, वह आप की भी ख़बर लेगा।" जब चलने लगे तो मुझे पुकार के बोले, "सुम्बुल ये कई एक काग़ज़ हैं, तुम अपनी अम्मा को दे आओ।" मैं ने उन्हें जाके अम्मा को दिया। अम्मा ने देखा तो क- हा कि ये तो नोट हैं। ग़रज़ उन्हीं रुपयों से सब क़र्ज़ भी अदा हुए, और १०० रुपये बच रहे। मगर अम्मा की बीमारी नहीं अच्छी हुई। (रोके) उन्हीं ने मरते वक़्त मियां सज्जाद को बुलवा भेजा,

और कहा कि, "बेटा सज्जाद मैं तो इस दुनियां मे रुख़सत होती हूं, ... हमारी सुम्बुल तुम्हारे सुपुर्द रही। (रोना) देखो इस पर ख़याल रखना। और हमारी यही आख़री दुआ है कि दोनों सदा खुश रहना।" (रोना और आंसू पोंछते जाना।) इस के बाद ही अम्माने इस दुनिया से कूच कर दिया। बस उसी वक़्त से मैं बराबर यहां हूं। (आह का भरना।)

हु०। (आंख पोंछके।) अच्छा बीबी, तुम और छोटी बीबी दोनों आदमी पन्द्रह सोलह बरस से तो ऊपर हुई होंगी, तो अब मियां तुम लोगों का ब्याह क्यों नहीं कर दे हैं? महल्ले के अमीर गरीब सब ही इस बातके लिये दुमे हैं।

[सुम्बुल का शर्म से सर नीचा कर लेना।]

हु०। बीबी न बीबी, हम से ई बात कहे में सरम क्या है? हम तो एक लड़काई न हैं। ब्याह काहे नहीं कर दे हैं?

[सज्जाद का प्रवेश।]

सज्जाद। क्या है रे हुसैनी, क्या है? किसका ब्याह होता है? तेरा ब्याह है क्या? कब है रे?

(सुम्बुल का शर्मा के उठ जाना, और हुसैनी का भाग जाना।)

सुम्बुल। आइये, अच्छी तरह हैं? आप के आने में देर क्यों हुई?

स०। (प्यार से) तुम अच्छी तरह हो न? ए है इतने ही दिनों में तुम इस क़दर लांबी हो गई! अगर एकाएक अचानक से कहीं नज़र पड़ जाती तो वल्लाह मैं तुम्हें पहचान भी नहीं सकता।

सु०। (हंस के) जी हां आप की दुआ से मैं अच्छी तरह हूं। बैठिये न ?

स०। (तअज्जुब से) यह क्या सुम्बुल, पहले जब मैं बिहार आता था, तुम बड़े प्यार से हमारे पास दौड़ के चली आती थी, और अब तो ऐसा मालूम होता है कि गोया तुम मुझ से भागती फिरती हो ; और इसके सिवा मुझे "आप" "आइये" "बैठिये" क्यों कहती हो ? इस के क्या मानी ? मुझ पर खफ़ा हो गया ?

सु० । भला आप पर खफ़ा ?

स० । फिर "आप।" तो खफ़ा नहीं हो तो क्या हो ?

सु०। कुछ तो नहीं है। अच्छा तो अब आप बैठिये न ।

स० । फिर ? फिर "आप" "बैठिये" ? सुम्बुल, मैं तुम्हारे पाओं पड़ता हूं, सच कहो माजरा क्या है ? आज तुम्हें क्या हो गया है ?

सु० । ला होलवलाकूवत, ऐसी बात मुंह से मत निकालिये । (रोवासो आवाज़ से) मैं आप की मिहरबानी से ज़िन्दे हूं, अम्मा के मरने पर आप मुझ पर मिहरबानी न करते तो हमारा क्या हाल होता। छी छी, आप को क्या ऐसा कहना लाज़िम है ?

स० । लो तो मैं अब जाता हूं। अभी फिर अज़ीमाबाद लौटे जाता हूं। क्या करूंगा यहां रह के ?

[जाना चाहता है ।

सु० । सुनिये, सुनिये। यह आप क्या करते हैं ? लोग क्यां कहेंगे ?

स० । लोग कहेंगे, कहने दो, मेरी बला से । मैं तो अभी

ज़रूर ही जाऊंगा । मैं ने तुम से सैंकड़ों बार कहा होगा कि जो बात गुज़र गई, उसे बार बार मत उकटा करो। मगर न मालूम तुम्हें क्या उन सैंकड़ो बरस की पुरानी बातों से ऐसा शौक़ है कि जब न तब वही बात निकाला करती हो । मैं तो ज़रूर ही जाऊंगा । कोई कुछ पूछेगा तो मैं कह दूंगा कि सुम्बुल मुझ से लड़ी है ।—

[जाने का उद्योग ।

सु० । (सज्जाद का हाथ थांभ के) हम से कुसूर हुआ, मुआफ़ कीजिये । वल्लाह मैं कभी अब उन बातों को ज़बान पर भी न लाऊंगी । आप मत जाइये ।

स० । (दुखित स्वर से) सुम्बुल, तुम क्या मुझे अब चाहती नहीं हो ? तुम मुझे बार बार "आप" "आप" क्यों कहती हो ? पहले तो ऐसा नहीं कहती थी ?

सु० । लड़कपन में बेवक़ूफ़ी को वजह आप को "तुम" "तुम" कहती थी। आख़िर लफ़्ज़ "आप" क्या बुरा है ? इस में आप का हर्ज क्या है ?

स० । हर्ज तो कुछ नहीं है मगर "आप" "आप" कहने से पराया सा जी में खटकता है। "तुम" कहने में जो बेतकल्लुफ़ी और प्यार ज़ाहिर होता है, वह बाबत लफ़्ज़ "आप" में नहीं है ।

सु० । क्यों, लड़के वाले जब सयाने होते हैं तो वालदैन को "आप" "आप" कहके पुकारते हैं, तो क्या इस से वह पराये हो गये ?

स० । जी हां, फ़र्माना आप का बजा है, मगर अफ़सोस इसी

क़दर है कि बन्दे की राय आप से मिलती नहीं। तो फिर आप खड़ी क्यों रह गईं आइये तशरीफ़ लाइये।

सु०। (हंसके) माज़, अल्लाह, इस नाज़ को देखो। इस की क्या मानी ?

स०। इसके यह मानी हैं कि "आप" "आप" कहने मुझे भी आता है।

[गुलशन का प्रवेश ।]

गुल०। (खुश होके) ऐ लो भइया आये! किस वक्त आये भइया ?

स०। अभी चला आता हूं। तू अच्छी तरह है न ?

सु०। (हंसके) क्यों गुलशन, तुम ने तो कहा था "भइया घर आयेंगे, तो मैं कभी जो उन से बोलूं ?"

नेपथ्य से। मार, मार,—अरे डांका पड़ा है डांका। भाग, भाग।

सब। (घबराके) यह क्या, यह क्या ?

[हुसैनो, और दो नौकरों का प्रवेश।]

नौकर सब। मियां, डांका पड़ा है, डांका।

सज्जाद, सुम्बुल, गुलशन। सो क्या, सो क्या ?

एक नौकर। साहिब, आज कल डकैती की बड़ी धूम है, आप को नहीं मालूम ?

स०। नहीं, मुझे क्यों कर मालूम हो ? मैं तो अभी चला आता हूं। (गुलशन से) अब्बास कहां है ?

गुल०। मुझे क्या मालूम ?

सुम्बु०। इस आफ़त के वक्त वह किधर गये ?

गुल०। भइया, अब क्या होगा ? (रोना।)

सज्ज०। तुम लोगों को कुछ ख़ौफ़ नहीं है। जब तक मैं ज़िन्दा हूं, तब तक तुम लोगों का कुछ नहीं हो सकता।

(नेपथ्य में डाकुओं की गोहार, और डर से
गुलशन और सुम्बुल का एक दूसरे
का हाथ पकड़ लेना।)

सज्ज०। (आलमारी से एक रिवोल्वर और एक तमंचा निकाल के सब का भरना।) (नौकरों से) तुम लोग सब कोई हिम्मत करते जाओ। डरो मत। कुछ परवा नहीं। इस कमरे के दरवाज़े को बंद कर के ज़ोर से दबाये रहो। कहीं ऐसा न हो कि तमंचा भरने के पहिले ही वह लोग अन्दर हेल आयें।

(नौकर लोग वैसा ही करते हैं।)

नेपथ्य में। अरे इधर सीढ़ी लगा, इधर। जल्दी रे जल्दी। साहब तुम चढ़ जाओ ऊपर।

नौकर लोग। ए मियां अब तो बचने की कोई तदबीर नहीं है। एक गुठ मकान के पीछे भी आ गई है, और सीढ़ी लगा के लोग छुप्प्ऽ चढ़े आवे हैं। साथ में मालूम होता है अंगरेज़ भी हैं। या अल्लाह, तू ही बचा। (विकट शब्द।)

गु०। आपा, गला हमारा सूखा जाता है, छाती हमारी उड़ी जाती है। तुम ज़रा हमें थांभे रहो।

सु०। (आंख पोंछके) अल्लाह ही मालिक है!

स०। (नौकर से) अरे तू तमंचा छोड़ सकेगा? ले देख, इस तरह घोड़े को खींचना, तब इसे नीचे दबाना।

नौकर। (रोता रोता) जी—ई—ई—

स०। दूर बेवकूफ़ तुझ से क्या होगा? तुझ को तो एक जी कहते डेढ़ पहर लगा। (छोटे तमंचे को मेज़ पर रखके) अभी यहीं रहे, पीछे देखा जायेगा। (गुलशन और सुम्बुल से) तुम लोग अब मत डरो। इन्शाह अल्लाहताला मैं इस से अकेला २० डाकुओं को भगाऊंगा, आइन्दे खुदा मालिक है। मगर देखो तुम घबराओगी, तो सब खेल बिगड़ जायेगा।

(नेपथ्य से भयानक कोलाहल, और एक खिड़की का टूटना और तल्वार वग़ैरह की चमक दिखाई देना। और तल्वार लिये खिड़की की राह से घसीटा वग़ैरह का कूदना। और सज्जाद की गोली खा खा के कई एक का गिरना और कई एक का भागना।)

सज्जाद। (घसीटा की तल्वार लेके) इसे भी मैं मज़ा दिखाता हूं। (डाकुओं पर बार बार गोली चलाना।)

नेपथ्य से। भाग, भाग, भाग रे। इन लोगों के पास बहुत सी बन्दूकें हैं।

नेपथ्य से। डैम, कावर्ड्स।

(दो गोरों का प्रवेश, और उन का सज्जाद पर हमला करना, और सज्जाद के हाथ से रिवोल्वर का गिर जाना।)

सज्जाद। (बहुत चिल्लाके) लोग गवाह रहें, जिस का जी चाहे हिन्दुस्तानियों की हिम्मत और ज़ोर को आज़मा ले! (ज़ोर

से तल्वार चलाना, दोनों की बातें रोकना, और दोनों को घायल घा-यल करना ।)

(एक गोरे का मर के गिरना, और उसी के बदन से फंस के सज्जाद का भी ज़मीन पर गिरना, और फिर उठने की कोशिश करना और सुम्बुल और गुलशन का रोना ।)

दूसरा गोरा । (सज्जाद के सीने पर लात रखके, और उस के गले के पास तल्वार की नोक लगा के) आई हैव यू नौज ब्लडी निगर !

सज्जाद । मैं तो अब मरता हूं, पर बहिश्त गवाह रहे कि हि-न्दुस्तानी बुज़दिल नहीं होते ।—सुम्बुल, गुलशन !

नेपथ्य से । अरे गिरा, गिरा, आओ आओ अब आते जाओ !

सु० । अब मुझ से नहीं रहा जाता । मैं हूं तो औरत, मगर खुदा तू हमारे दिल में इस वक़्त हिम्मत बख़्श ! (छोटे तमंचे को उठा के दूसरे गोरे पर चलाना, और गोरे का मरके गिरना ।)

(डाकुओं का फिर प्रवेश, और सज्जाद का फिर तल्वार लेके उठना ।)

डाकू लोग । ए बाबा, ई तो फेर उठा रे ।

[सब डाकुओं का भागना ।

[सज्जाद उन के पीछे जाना चाहता है ।]

सुम्बु० और गु० । (सज्जाद का हाथ थांभके) वह अब भाग गये, अब तुम्हारे जाने की ज़रूरत नहीं ।

स० । सुम्बुल, आज तुम ही ने हमारी जान बचाई । खैर यह

बात तो पीछे होगी पर मैं एक बार ज़रा देख आऊं, कहां कहां क्या हुआ है ;

[गया ।

सुम्बुल और गु० । तुम मत जाओ, तुम मत जाओ ।

[सज्जाद के पीछे पीछे दोनों का जाना ।

(नेपथ्य में दूर पर लाठी तल्वार की आवाज़ ।)

एक नोकर । अरे देख तो हमरे गर्दन की तो नहीं काट डालिस है ?

[कांपता कांपता बाहर गया ।

पांचवां अंक।

पहिली झांकी।

बिहार, अंधेर, सज्जाद का मकान।

चारपाई पर सज्जाद सोये हैं, और पास
सुम्बुल बैठी है।

सुम्बुल। (सज्जाद के मुंह की तरफ़ देखती हुई गमज़दह आवाज़ से) अब हमारा यहां रहना लाज़िम नहीं। रात दिन का इस के पास रहना ठहरा, शायद जी की बात अगर निकल पड़ी, तो फिर शर्म और ख़जालत की तईं रखने की जगह न मिलेगी। जितना इस के पास रहती हूं, जितना इसे देखती हूं, उतनी ही हमारी मुहब्बत भी बढ़ी जाती है। कभी कभी यह भी जी में आता है कि, सज्जाद, अब कहां तक छिपाऊं अपने दिल के फफोले छाती फाड़के तुझे दिखा हो दूं, कि जिस में दिल का दर्द दफ़ा हो जाये। मगर हिम्मत नहीं पड़ती। जब ही अपना दुखड़ा कहने की मुसम्मद

होती हूं, तब ही दिल धड़कने लगता है, गला सूखा जाता है, और मुंह से बोली नहीं निकलती ।—आख़िर कह ही के क्या करूंगी? अव्वलन तो तूने यह वादा किया है कि मैं शादी ही नहीं करूंगा, दूसरे मुझ में कौन सा ऐसा हुनर है कि जिस से तेरे दिल को अपनी तरफ़ रिझा सकूं। मुहब्बत तो बराबर वालों में होती है। मगर तुझ में और मुझ में तो आसमान और ज़मीन से भी ज़ियादा फ़र्क़ है तू इल्म हिल्म और सख़ावत का बादशाह है। जहान में कौन है, जो तुझ से राज़ी और खुश न हो? अम्मा ने ठीक कहा था "बेटी, मियां सज्जाद इन्सान नहीं हैं, वह कोई फ़रिश्ता हैं।" हमें इस बात का मतलब तब समझ नहीं पडता था, अब मैं समझती हूं। और मैं,—मैं क्या हूं? कमज़ोर दिल की एक अदनी औरत। मुझ में कोई ऐसा वस्फ़ भी नहीं है, जिस से मैं तेरे प्यार के लायक़ होऊं। (आह भरना) दिल कड़ा करके और तुझे जगाके क्या इसी वक़्त अपना जला दिल दिखा दूं? न: कहने से शायद ख़फ़ा हो जावे, नफ़रत करने लगे। दिल की आग दिल ही में रहे। (मुसुकाना) हाय, मेरी ज़िन्दगी यों ही गुज़र जायेगी। हाय, ग़म हमारा सारी उम्र का साथी हुआ। (आंसू का गिरना।) हमारे चले जाने से अब तेरा नुक़सान भी नहीं है। गुलशन है, वही तेरी ख़िदमत किया करेगी। (उठके, रोती हुई) प्यारे, दिलबर, अब मैं रुख़सत होती हूं, सारी उम्र के लिये रुख़सत होती हूं। (रोती हुई ज़रा दूर सरकके) खुदाया! तेरे पास मैं यही दुआ मांगती हूं कि इसे औरहम को ख़ुश रखना और जब मरूं तो इसे दुख़्द-इ-दिल का मुखड़ा एक बार देख के मरूं (कुछ और दूर सड़क कें।)

गीत ।

(ग़ज़ल—रागिनी भैरवी ।)

दिल प' है जाँनि जहां नक्श जो मूरत तेरी,
हिज्र में भी मुझे हासिल है ज़ियारत तेरी ।
ज़ाहिरा दूर हूं, पर दिल से क़रीं हूं तेरे,
जान के साथ है ऐ जान मुहब्बत तेरी ।
दीद तेरी मुझे हासिल है, तसव्वुर में मदाम,
रहती है ज़ेरि निगह आंखों में मूरत तेरी ।
हो बुरा शर्म औ हया का कि है माने, वरन
उम्र भर करती मैं, वल्लाह ! रिफ़ाक़त तेरी ।
जान जां देख के तुझ को भी नहीं चैन मुझे,
चुटकियों से मेरा दिल मलती है सूरत तेरी ।
तेरे उठते हुए बस मोत ही आ जाती है,
आमदे वस्ल मुझे होती है रुख़सत तेरी ।
कोह औ सहरा में हूं आवारा जो मैं बहरे नसीब,
अपनी क़िस्मत का गिला है, न शिकायत तेरी ।
ज़िन्दगी तल्ख़ है बे तेरे सनम, सुम्बुल की,
एक दिन क़त्ल करेगी उसे फ़ुर्क़त तेरी ।
कोह औ सहरा में जुज़ यास कोई साथ नहीं,
कौन जंगल में कहे आके हक़ीक़त तेरी ।
सुम्बुले शेफ़्ता की जल्द ख़बर ले सज्जाद,
होन बरबाद कहीं सारी यह मिहनत तेरी ।

अरे हुसैनी, मियां इधर अकेले हैं ज़रा इधर आ कर बैठ !

(सज्जाद की तरफ़ कुछ देर तक देखने के बाद रोती हुई गई ।)

(हुसैनी का प्रवेश ।)

हु० । (सज्जाद को पंखा झलता हुआ) मुम्बुल बीवी की मिहनत भी गज़ब है। आज डाका पड़े को अंदाज़ महीना एक हुआ होगा—जिस दिन मियां का पांव, फिसलके गिर पड़ने से, टूट गया था—उस दिन से बिबो को कैसा खाना, और कैसा सोना। जब देखो तब मियां की टहल में लगी हैं। और किसी को कोई काम नहीं करे दें हैं। छोटी बीवी ज़बरदस्ती कोई काम किहिन तो उन पर बड़ी खफ़ा। मियां को जहां ज़रा तकलीफ़ या दरद हुआ कि इन को जान निकले लगी। हम बहुत दफ़े लुक लुक के देखा है कि ज़रा मियां का जी मांदा हुआ कि सुमुक सुमुक के रोवे हैं ।—हुकुम करे तो जानबे न करे हैं, सब काम अपने ही हाथ से।—इ‌केती के मुकद्दमे का थाने वालें सब ने कैसा गोलमाल कर दिया।

सज्ज० । (नींद टूटने के बाद चारों तरफ़ देखके) क्यों मुम्बुल, कहां हैं, किधर गईं ?

हु० । जी, अभी हम को बलाके उधर गई हैं। जां हैं, बुला लावे हैं।

[गया ।

सज्ज० । है है मुम्बुल ने हमारे लिये कैसो कैसी तकलीफ़ें उठाई हैं। लेकिन तब भी किसी वक्त चिहरा उस का मैला नहीं दिखाई दिया, जब देखो तब खुश । न खाना है न सोना है, मगर तब भी चिहरा फूल सा खिला हुआ। जिस वक्त मैं अपने ज़ख्मों

के दर्द से बेहाल रहता था, उस वक़्त जो कहीं सुम्बुल पास आके बैठती तो फिर कहां का दर्द और कहां की बेकली। औरतों के दिल रहम और दिल सोज़ी के गढ़ रहती हैं। दर्द ने शायद इस शेर को औरतों ही के लिये कहा था—

"दर्द दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को,
वर न ताअत के लिये कुछ कम न थीं करों बयां।"

ये दूसरों की खुशी से खुश, दूसरों के ग़म से ग़मगीन अपना कुछ ख़याल नहीं। इस दफ़े सुम्बुल अगर हमारी बीमारदारी न करती, तो मैं अभी तक ख़तम हुआ होता। बीमारदारी को कौन पूछता है, डाकुओं से हमें किस ने बचाया था? ये चंद दिनों से न मालूम हमारी तबीअत कैसी कैसी होती है। एक लहज़ा भर भी सुम्बुल से अलग होने में दिल को तक्लीफ़ होने लगती है। इस का क्या सबब?—हमारा जी खटकता है—(ग़ौर करता हुआ) आख़िर इसके क़बूलने में शर्म क्या है? सिर्फ़ इहसान का ख़याल है। इहसान मानना क्या गुनाह है?—बेशक, सुम्बुल को मैं प्यार करता हूं, मगर बतौर भाई के। इस में तो कुछ गुनाह नहीं। इस तरह की मुहब्बत तो हमारी राय के बरख़िलाफ़ नहीं है।—इधर कई एक दिनों से मैं देखता हूं कि मुंह की तरफ़ देखते ही सुम्बुल शर्मा के मुंह नीचा कर लेती है, और कभी कभी फेर लेती है। (ग़ौर करना।)

(हुसैनी का प्रवेश।)

हु०। मियां, सुम्बुल बीबी तो उधर नहीं हैं, ऊपर नीचे सगरो खोजा कहीं न मिलीं।

सज्ज॰। जायेंगीं कहां, उधर ही कहीं होंगी। फिर जा, अच्छी तरह ढूंढ।

[हुसैनी गया।

हाथ में चिट्ठी लिये गुलशन का रोते हुए प्रवेश।

गुल॰। भइया, यह क्या? आपा कहां गईं? तुम ने क्या उन को कुछ कहा था?

सज्ज॰। (घबरा के।) क्यों क्यों, क्या हुआ? वह कहां गईं।

गुल॰। लो, सुनो। (सुबुक सुबुक के चिट्ठी का पढ़ना।)

प्यारी बहन,

तुम लोगों के इहसान इतने मुझ पर हैं कि मैं सर नहीं उठा सकती। मुझे न बाप हैं, न मा है, मैं यतीम हूं। लेकिन तुम लोगों की मुहब्बत और मिहरबानी से मैं आज तक यह नहीं जानती कि तक्लीफ़ किसे कहते हैं। मैं कहीं और किसी हालत में क्यों न रहूं, मगर तुम लोगों को कभी न भूलूंगी। बहन, कुछ ख़याल मत करना, तुम से हमेशा के लिये रुख़सत हुई। हमारे लिये न बेफ़ाइदा अफ़सोस करना, न हमें नाहक ढूंढवाना। इस दुनिया में अब तुमलोगों से और मुझ से मुलाक़ात नहीं होगी। अल्लाह तआला गुफ़ुर-उल-रहीम के पास हामारी यही दुआ है कि तुमलोग सदा खुश रहो। गुलशन, प्यारी बहन, तुम्हें छोड़ते छाती फटती है, पर क्या करूं, लाचार हूं। गुलशन, मुझे भूलना मत, दिन भर में एक बार भी याद करोगी तो बहुत है।

तुम्हारी कम्बख़्त सुम्बुल।

(आंसू पोछके।) सारे खत में तुम्हारा नाम कहीं नहीं लिखा है। भइया, तुम आपा पर खफ़ा तो नहीं हुए थे।—भइया, हमारा जी कैसा कैसा जो हो रहा है, कहने की कुछ, मुंह से निकलता है कुछ,—देखो हम पर खफ़ा न होना। (रोना।)

सज्जा०। (आंख पोछ के) गुलशन, हम क्या कभी तुमलोगों पर खफ़ा हुए हैं? क्या हमें अक्ल नहीं है?

(घबराया सा अब्बास का प्रवेश।)

अब्बा०। क्या है क्या? माजरा क्या है? बीबी सुम्बुल गईं कहां?

सज्जा०। (रोवासी आवाज़ से) भाई लो, देखो।

(अब्बास के हाथ में सुम्बुल की चिट्ठी का देना।)

अब्बा०। (पढ़ के) हाय यह क्या, इस के क्या मानी?

(हुसैनी का प्रवेश।)

हुसैनी। इस चिट्ठी को डकवहा दे गया है।

[अब्बास के हाथ में चिट्ठी दे के जाना।

अब्बा०। (चिट्ठी जल्द पढ़ के) ऐ लो, यह एक और आफ़त! बाबू नरसिंह सहाय लिखते हैं कि अनन्तपुर के मजिस्ट्रेट ने झूठ तुहमत लगाने का जुर्म क़ायम कर के आप पर नालिश की है।

सज्जा०। मुक़द्दमा कहां होगा, और कब?

अब्बा०। पटने में, अभी चौदह दिन बाक़ी है।

(हुसैनी का फिर प्रवेश।)

हुसैनी। मियां, एक चिट्ठी आउर है। मोख़ार साहेब भेजिन हैं।

सज्जा॰ देखूं, देखूं। (चिट्ठी पढ़के) लो, एक मुक़द्दमा और है। शमशेर बहादुर ने नालिश की है। अगले सनीचर की तारीख़ पड़ी है।

गुल॰। सब मुसीबतें क्या एक ही बार आयेंगी? (रोना।)

अब्ब॰। दुनिया का यही क़ायदा है। (ठंडी सांस लेना।)

सज्जा॰। हां और क्या, अक्सर तो यों ही देखा जाता है। गुलशन, आफ़त के वक़्त रोना लाहासिल है।—बिल्कुल बेफ़ाइदा है। हर शख़्स की ज़िन्दगी आफ़तों का गोया एक एक वसीअ मैदान है।

गुल॰। भइया, कहना तुम्हारा बजा है, मगर दिल नहीं मानता आपा के वास्ते यह अब बेताब हुआ जाता है। (ज़ोर से रोना।)

सज्जा॰। (हुसैनी से) जा, दीवान जी को तो बुला ला।

[हुसैनी का जाना।

सज्जा॰। (गुलशन से) तुम्हारे पास सुम्बुल का जो फ़ोटोग्राफ़ है, उसे ज़रा ले तो आओ।

[गुलशन का जाना।

सज्जा॰। (झट खड़े हो कर अब्बास से) अब्बास तुम यहीं रहो, गुलशन तुम्हारे ही सुपुर्द है। दीवान जी से पूछ पाछ के मुक़द्दमे के बारे में जो मस्लहत हो सो करना। मैं सुम्बुल की तलाश में जाता हूं।

[जाना चाहता है।

अब्ब॰। बग़ैर आप के मुक़द्दमा क्यों कर चलेगा? कुछ नहीं तो, तारीख़ के रोज़ तो आप को ज़रूर ही हाज़िर होना पड़ेगा।

सज्ज०। इनशाह अल्लाह तआला, मैं तारीख़ के क़बल ही लौटूंगा। गुलशन पर ख़याल रखना, ज़ियादा रोवे ऊवे तो समझा बुझा देना।

[जाना।

अब्ब०। सुनिये, सुनिये—

[जाना।

(गुलशन का फिर प्रवेश।)

गुल०। भइया, किधर गये? भइया आ-आ—

[रोते रोते जाना।

दूसरी झांकी।

बिहार, अंधेर, मियां सज्जाद के मकान के पास का बाग़, और तालाब।

(बुढ़िया के भेस में शमशेर बहादुर और चार डाकुओं का प्रवेश।)

शम०। (जी में) दुनियां में इतने दिनों तक रहने से मैंने और और बातें तो सीखी ही हैं, लेकिन हमारी यह सिफ़त दर्जे कमालियत को पहुंच गई है कि जब किसी काम में हाथ डाले तो उसे जब तक कामयाब न हो, न छोड़े। और जहान में भला कौन सी ऐसी बात

है जो खर्च और कोशिश से नहीं हो सकती? कामयाब होने का वादा करे तो क्या इमकान कि कामयाब न हो।—मगर, अफ़सोस बिचारा बसीटा, काम ख़तम भी न होने पाया कि आप ख़तम हो गया। बिचारा इन बातों में जी का बड़ा ही शौक़ था।—मर गया, चलो एक तरह से अच्छई हुआ। हमारी कोई बात, क्या छिपाने की और क्या नहीं छिपाने की, उस से पोशिदा न थी। इस दफे अल्लाह ने बड़ी ख़ैर की, जो वह कहीं न बचाता, तो क्या इज़्ज़त क्या जान क्या माल सब ख़ाक में मिल गया होता। मैंने तो ख़याल किया था कि सज्जादबा लौंडा सिर्फ़ किताब का कोड़ा ही है, लेकिन यह कौन जानता था कि बचा बन्दूक़ चलाना भी जानता है। और शुदनी देखो कि हमेशा तो वह पटने में रहता है, ख़ास उसी दिन खुदा मालूम कैसे घर ही पर मोजूद था।—मगर बचा इस बार कहां जाओगे? इस दफे तो हम भी बन्दूक़ लाये हैं। खैर जो हो लेकिन तब भी इस दफे काम बड़ी होशियारी से किया चाहिये। फिर "मुड़ली बेल तले" चली है।—उधर साले पर मुक़द्दमा भी दायर है, इनशाह अल्लाह तआला अब जल्द ही उसकी दौलत अपने हाथ आती है। बग़ैर ज़हरीले दांत तोड़े सांप इख़्तियार में नहीं आता। ग़रीब को जो नाच नचाओ, नाचेगा। (ज़ाहिर, साथियों से) यारो होशियार रहना। जिस जिस तरह बता दिया है, सब याद है न? देखो बड़ी ख़बरदारी से, अगर पकड़े गये, तो सब के सब जहन्नुम को चले जाओगे। क्या कहोगे, ख़याल है?

डाकूलोग। जी रहने दीजिये, जो पहले पहल आया हो उस को सिखाइये। हम सब को क्या सिखाइये है, हमलोगों ने तो अपनी

अपनी ज़िन्दगी ही इस के पीछे गंवाया है। "है कोई दाता, जो इस अन्धी बुढ़िया की ख़बर लेवे ।"

(नेपथ्य में आवाज़ ।)

शम० । चुप ! यह आवाज़ कैसी आई ?

१ला डा० । हम देख आते हैं ।

(गया और झट लौट आया ।)

१ला डा० । बड़े मियां बड़ा मज़ा हुआ है । बड़ी छोकड़िया का जो एक हज्जाम के साथ निकल गई है, और उस के पकड़े को सज्जाद मियां खुद गये हैं ।

शम० । अरे सच कह । अब लो यारो अब तो मुआमिला फ़तह है।

१ला डा० । बकसीस का दोगे पहले सो कहो, कैसी खुसखबरी ला दिया है ।

शम० । बबराते क्यों हो, सब मिलेगा । मगर भ'ई बचा हज्जाम ने बड़ा काम किया ।

२रा डा० । ऐ लो, वह देखो कौन चला आता है ।

शम० । हां हां तीन आदमी हैं । लो, अपने कपड़े संभाल लो । जल्दी जल्दी । (एक डाकू से) अरे बेवकूफ़ सर का कपड़ा ज़रा और खींच ले। (किसी दूसरे डाकू से) अरे भुच्चड़, तुझे एक दुम जो बाहर निकली हुई है। लाहौल वलाकूवत इन बेवकूफ़ों के साथ काम क्या करना है कि अपनी भी जान देनी है ।

(गुलशन, अब्बास और एक दाई का प्रवेश।)

गुल०। (दाई से) मामा, दीवान जी ने क्या कहा? भइया का कोई पता लगा या नहीं?

दाई। नहीं बीबी, अभी तक तो कोई पता नहीं लगा है।

गुल०। आपा का?

दाई०। नहीं, उन का भी नहीं।

गुल०। (अब्बास से) भइया जिस वक़्त जाने लगे तुमने हमें पुकार के कहा क्यों नहीं?

अब्ब०। फ़ुर्सत कहां मिली कि तुम्हें पुकारूं। मैं तो निरा ख़ब्त हो गया था, भला यह आफ़त पर आफ़त!

दाई०। बीबी, कुछ परवा नहीं, खुदा सब अच्छा करेगा।

गुल०। (रोके) हाय हाय आपा भी गईं, भइया भी गये, और उस पर ये दो दो सख़्त मुक़द्दमे। खुदा तेरी क्या मर्ज़ी है? न मालूम कौन कौन आफ़तें और डालेगा!

दाई०। बीबी, यह क्या लड़के की तरह रोती हो। डर क्या है। दीवान जी कहिन हैं कि मुक़द्दमे का कुछ डर नहीं क्योंकि बस्ती वाले सब तुम्हारिये तरफ़ हैं। और गांव के बहुत से आदमी मियां की खोजे निकले हैं।

अब्ब०। (गुलशन से) रात ज़ियादे आ गई, तुम जाओ, सो रहो।

डाकूलोग। (पास आके) कोई है राम का प्यारा, माई मिले भूखे को दो दाना अन। बड़ा पुन होगा।

दाई। (तअज्जुब होके) एँ, इतनी बड़ी रात को भीख कैसी ? कुल भोरे आइयो, जाओ।

डा० लो०। (रोवासी आवाज़ से) माई तीन दिनों से भूखी हैं कुछ मिल जाय माई, भगवान तुम लोगों का भला करेगा।

गुल०। अच्छा, तुमलोग हमारे साथ आओ, मैं दिलवा देती हूं। (आगे बढ़ना।)

शम०। (जी में) नाज़िनो, एक बोसे का सवाल है।

दाई। मरी कैसी फकीरीन रे। निगोड़ी बदन पर काहे चढ़ी आवे है ? राह नहीं सूझे है ?

डा० लो०। जय हनुमान की।

(डाकुओं का गुलशन, अब्बास और दाई को एक बारगी पकड़ना और उन के मुंह में कपड़े ठोंस के सब का बांधना।)

शम०। बस कोई चूं न करने पावे। तुम लोग सब अलग अलग राह से जाइयो। हम सब को कश्ती पर सवार करा के भागलपुर चलान करेंगे।

[सब का प्रस्थान।

तीसरी झांकी।

राजमहल के पास की पहाड़ी ज़मीन।

घोड़े पर सवार सज्जाद हुसैन का प्रवेश।

सज्जा०। अहा यह जगह क्या ही सुहावनी है! हमने आज तक इस तरह का पहाड़ कभी नहीं देखा था। असल और नक़ल में कितना फ़र्क़ है! सामने वह पहाड़ की चोटियां ठीक काली घटा सी देख पड़ती हैं। चारों तरफ़ दूब का सब्ज़ मैदान, जिन के बीच में जगह जगह पर ऊंचे ऊंचे दरख़्त हैं, क्या कैफ़ियत दिखा रहा है। वह छोटी नदी अलग ही दूर से ठीक चांदी के तार का तकल्लुफ़ दिखा रही है। इतने बड़े मैदान में आदमी की बस्ती का कहीं निशान तक नहीं देखा जाता।—यहां आने से आप ही आप सब की तबियत बश्शाश हो जाती होगी। जो सब से कमबख़्त है, वह भी यहां आ कर एक बार ख़ुश हो जाता होगा। (आह भरके) लेकिन हमारे दिल की तसल्ली कहां, हमारे दिल में तो आग लगी है, इसे ख़ुशी मिले क्यों कर? बुलबुल की मा मरते वक़्त बुलबुल को मेरे सुपुर्द कर गई थीं, अब फ़र्ज़ करो—हरचंद यह ग़ैरमुम्किन है—फ़र्ज़ करो इस वक़्त मुझ से आ कर पूछें कि, "दग़ाबाज़, हमारी

सुम्बुल कहां है ?" तो क्या मैं जवाब दूंगा ?—इतनी जगह फिरा, इतना ढूंढा, लेकिन सुम्बुल का तो कहीं पता न लगा। इलाही, अब मैं क्या करूं ! सुना था कि सुम्बुल के मामू यहीं राजमहल में कहीं नौकर हैं, मगर कहां, यहां भी तो तमाम ढूंढा। यहां तो उन का कोई भी नहीं है। (पीछे देखके) साईस किधर गया ? धन्नू ऊ-ऊ ?

[धन्नू का प्रवेश।]

धन्नू। जी हजूर।

सज्जा०। इतनी देर से क्या करता था ?

धन्नू। हजूर, चले तो आते हैं, बराबर।

सज्जा०। घोड़े को ले जाओ। मैं भी टहलता टहला पैदल ही दो एक घड़ी में पहुंचता हूं।

धन्नू। बहुत अच्छा, सरकार।

[घोड़े को ले कर धन्नू का जाना।

सज्जा०। इस सब्जी पर टुक बैठूं। (बैठना) गुलशन के लिये जी घबराता है। कुछ डर तो है नहीं, क्यों कि अब्बास वहीं है।

नेपथ्य से। अंधा के एगो पैसा मिले बाबू, अंधा के एगो पैसा मिले बाबू।

सज्जा०। यह क्या ?

एक अंधे फ़क़ीर का प्रवेश।

अंधा। अंधा के एगो पैसा मिले दाता। भगवान तुम्हारा भला करेगा।

(पैसे के वास्ते सज्जाद का जेब में हाथ डालना, इतने में अंधे का आंख खोल के सज्जाद के सिर पर लाठी मारना, सज्जाद को ग़श

आ जाना, और ज़मीन पर गिर पड़ना।)

(चार आदमियों का प्रवेश।)

१ला आ०। जल्द, जल्द। देर करने का वक़्त नहीं है। बहुत रुपये हैं।

(एक जगह की घास हटाने से एक दरवाज़े का निकलना, और उस में सज्जाद को ले कर एक के सिवा सब का हेल जाना, और एक आदमी का उस दरवाज़े को बन्द कर के पहले का सा बना देना।)

एक आदमी। अंधरा के एगो पइसा मिले दाता, राम राम, अंधरा के केऊ कुछो देलकई न।

[जाना।

चौथी झांकी।

राजमहल के पास की पहाड़ी ज़मीन, ग़ार।

सज्जाद बेहोश पड़ा हैं, और चार आदमी बैठे हैं।

सज्जा०। (होश में आके) तुमलोग मुझे कहां लाये हो? मैं कहां हूं?

१ला आदमी। आप बहुत अच्छी जगह में हैं। कुछ परवा नहीं।

सज्ज०। मुझे यहां क्यों लाये हो?

१ला आ०। कहता हूं। मगर पहले हमारे एक सवाल का जवाब आप दे लें। अंगरेज़ों की सल्तनत से आप खुश हैं?

सज्ज०। यह तो एक अजीब सवाल है! इस से तुम्हारा मुद्दआ क्या है? (जी में) अल्लाह, यह क्या बात है? ये कौन हैं? शक्ल से तो ये देहाती मालूम होते हैं, पर ज़बान इस क़दर फ़सीह!

१ला आ०। पहले आप हमारे सवाल का जवाब तो दें, पीछे मुद्दआ आप ही मालूम हो जायेगा।

सज्ज०। जब तक सवाल का मतलब न समझ लूं, क्यों कर जवाब दे सकता हूं? तक्लीफ़ और आराम तो सब ही की सल्तनत में है।

१ला आ०। कहना आप का बजा है, मगर तब भी कमोबेश। गरज़ हमारी यह है कि अकबर वगै़रह बादशाहों के ज़माने में रऐयतों को जैसा आराम था, इन के वक़्त में वैसा है?

सज्ज०। बे शक मुसल्मानों की सल्तनत में बाज़े बादशाह ऐसे थे, कि अगर मैं बुतपरस्त होता, तो रोज़ उन की खुद पूजा किया करता। मगर बहुतेरे उन में से अय्याश, खुदराय, और ज़ालिम थे। हरचन्द मैं मुसल्मान हूं, पर तौभी हमारी यह ख़ाहिश नहीं है कि इस वक़्त मुसल्मानों की सल्तनत फिर हो।

१ला० आ०। (ताने से) तुम्हारे अंगरेज़ों में तो सब ही नफ़्स-कुश हैं—सब ही गोया भेंड़ों के बच्चे से सीधे हैं।

सज्ज०। हमारी यह ग़रज़ नहीं है। मुसल्मानी सल्तनत में बादशाहों की खुदराई की हद नहीं थी, और अंगरेज़ी सल्तनत में क्या ज़ालिम क्या जाबिर सब ही को आईन की पाबंदी है। इसी सबब इन के वक्त में ज़ुल्म की ज़ियादती नहीं है।

१ला आ०। अंगरेज़ी सरकार जो कभी कभी बड़े बड़े ज़ुल्म किया करती है, उनसे आप नावाकिफ़ हैं, या उन के कुबूलने में आप की कुछ उज़्र है।

सज्ज०। दो में से एक भी नहीं।

१ला आ०। खैर आप का देस अगर आज़ाद हो तो आप खुश हों या नहीं?

सज्ज०। भला, नेकी और पूछ पूछ के?

१ला आ०। आप के देस को आज़ाद करने की कोई कोशिश करता हो, तो आप उस को मदद करें या नहीं?

सज्ज०। (जी में) वाह वा, यह बात क्या है! सब कुछ अच्छी तरह जान लेना चाहिये। (ज़ाहिर।) इस सवाल का जवाब बिलफ़ेल मैं नहीं दे सकता, मगर इस तरह की कोशिश क्या कोई कर रहा है?

१ला आ०। हां, बहुत दिनों से यह कोशिश यहां हो रही है। देखिये, हमलोगों ने कितनी बन्दूकें और दूसरे हर्बे इकट्ठे किये हैं।

सज्ज०। (मुस्कुराके) आप क्या इसी सामान से अंगरेज़ों को हिन्दुस्तानियों की ज़मीन से निकाला चाहते हैं?

१ला आ०। दिल्ली शहर एक ही दिन में नहीं तय्यार हुआ था।

सज्ज०। मुझे यहां क्यों लाये हो?

१ला आ० । सुनिये । काफ़िरों ने हम लोगों का सब माल असबाब लूट लिया है। पस हमलोगों को राय है कि अपनी छीनी हुई दौलत मय सूद उन की रऐयत से वसूल करें। कुछ रुपये ज़ियादे जमा हो जावें तो बारूद का कारख़ाना शुरू हो। आप को ४००० रुपये देने पड़ेंगे।

सज्जा० । अगर न दूं ?

१ला आ० । तो तुम्हारी बीवी बेवा होंगी।

सज्जा० । (मुस्कुरा के) तो हमारी एक बात सुनिये। यह आप की कोशिश बिलकुल लासूद है। आप कभी कामयाब न होंगे। हमारे मुल्क के बुज़दिले हनोज़ आज़ादगी के मज़े की क़दर नहीं समझते। फ़र्ज़ किया कि इन्हें आज़ादगी हुई भी, तो बहुत दिनों तक इसे संभालना मुहाल है। इस के अलावह एक बात और भी है कि आज़ादगी के नाम से आप की ताबेदारी कोई क़बूल नहीं करेगा।— आप इस ख़याल को छोड़ें। और मैं वादा करता हूं कि इस के बारे में किसी से नहीं कहूंगा।

१ला आ० । (हंसके) ख़ैर यह बात तो पीछे होगी। पहले यह कहिये कि रुपया देना आप को मन्ज़ूर है या नहीं ?

सज्जा० । हमारे पास तो रुपये बिलफ़ेल हैं नहीं।

१ला आ० । आप इमें एक इक़रार-नामा लिख दीजिये कि मैं इन के पास ४००० रुपयों का क़र्ज़दार हूं, बस काफ़ी है।

सज्जा० । अगर मैं आप की सब बातें ज़ाहिर कर दूं ?

१ला आ० । हर्ज क्या है ? सुबूत दे सकेंगे ?

सज्जा० । क्यों, आप का यह मकान।

१ला आ०। कहां है यह मकान?—मालूम है?

सज्ज०। नहीं, यह तो नहीं मालूम है। मगर शायद ढूंढ के निकाल सकूं।

१ला आ०। (मुस्कुरा के) आप के से सैंकड़ों आये और गये मगर कोई भी तो नहीं ढूंढ सका।

सज्ज०। क्यों?

१ला आ०। क्यों कि बेहोश आये, और बेहोश गये।

सज्ज०। बेहोश आने का मतलब तो समझता हूं—याने जैसा हमारे वास्ते हुआ था—मगर बेहोश जाते हैं क्यों कर?

१ला आ०। शराब और अफ़्यून।

सज्ज०। (जी में) खुदा की पनाह, यह जब्र! जनाब, आप का दौलतख़ाना कहां है? ज़बान तो आप की बड़ी फ़सीह है।

१ला आ०। जी आप के अक़्बाल से बन्दे को बहुत सी ज़बानों में दख़ल है।

सज्ज०। (चट उठ कर, एक बन्दूक़ उठा उस का मुंह एक बारूद के पीपे में लगा के) बस देखिये, ख़ाह कलामउल्लाह छूके क़सम खाइये कि "तुम्हें छोड़ देंगे" या नहीं तो हुक्म दीजिये बन्दूक़ दाग़ दूं, और हमलोग सब के सब शामिल बहिश्त की राह लें।

(एक शख़्स का आहिस्ते आहिस्ते दबे पांव से प्रवेश, और सज्जाद के बायें कांधे पर ज़ोर से चोट उस का देना, सज्जाद के हाथ से बन्दूक़ का गिर जाना, और डोरी से सज्जाद का हाथ बांधना।)

१ला चा० । हज़्रत आप की बहादुरी अक्लमंदी और चालाकी में रत्ती भर भी शक नहीं। अगर आप हमारे शरीक होते तो हमारा बड़ा काम निकलता। मुआफ़ कीजियेगा, हम लोग सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा करते हैं। जब तक आप हम लोगों की राय से न मिलेंगे तब तक आप को बतौर क़ैदी के भूखे प्यासे यहीं रहना पड़ेगा। (साथियों पर इशारा करना, और उन का दो एक तख़्तों का उठा कर एक गढ़े में सज्जाद को गिरा देना।)

सज्ज०। (अन्दर से) यहां बड़ा अंधेरा है। खाना दीजिये या न दीजिये मगर बराय खुदा एक चिराग़ तो दीजिये। हज़्रत, छिपकिलियां वग़ैरह कीड़े बदन पर रेंगते हैं। बनज़र-इ-मिहरबानी रोशनी दीजिये।

१ला चा० । रुपये देना मंज़ूर है?

सज्ज०। (कड़ी आवाज़ से) नहीं, नहीं, दस हज़ार मर्तबे नहीं। मुझे बुज़दिला मत समझिये। लेकिन याद रहे कि अगर किसी हिकमत से कभी खुदा ने इस दोज़ख़ से रिहाई दिलाई, तो इन्शाय अल्लाह तआला आप लोगों को पूरी सज़ा दिलाउंगा।

१ला चा० । (हंसके) बहुत खूब।

[सब का जाना।

पांचवीं झांकी।

बाग।

कई एक आदमी बैठे बैठे शराब पी रहे हैं और गा रहे हैं।

१ला मतवाला। गुरू, अब बहुत हुआ। गुरू, ज़रा गिलास तो दो, गला तर कर लें।

२रा म०। अरे उल्लू का पट्ठा तूने दो बोतलें तो साफ़ कर डालीं अब खींचेगा तो चुभ डूब करने लगेगा।

१ला म०। दुर जोरू का भाई, दो ही तीन बोतलों में घबरा गया? ला, ला, कुछ परवा नहीं। तेरी बहन रांड़नहीं होगी।

२रा म०। अगर होहीगी तो भी क्या परवा है गुरू? अब तो रांड़ों की शादी की भी चाल निकला चाहती है।

(सब का शराब पीना।)

कुछ दूर पर सुम्बुल का प्रवेश।

सुम्बुल। अब नहीं चल सकती। पांओं में आबले ही ही आये हैं।—मामू का घर अभी और कितनी दूर होगा?—न मालूम मामू हमें पहचानेंगे या नहीं? अव्वल तो वह कुछ अपने मामू नहीं, दूसरे आज आठ आठ बरस हुए कि न हमें ने उन को देखा है और न उन्हों ने हम को देखा है। (आसमान की तरफ़ देखके) अल्लाह क्या घनघोर घटा छा आई है! ज़रूर पानी आयेगा। (बादल का गरजना और बिजली का चमकना।) उः क्या ही भयानक आवाज़ है, हमारे कान को बहरा किये देती है। (गौर करती हुई) अल्लाह

क्या करूं, कहां जाऊं?—वह चिराग़ टिमटिमा रहा है, वह ज़रूर बस्ती होगी। वहीं जाऊं पनाह लेने लायक़ जगह मिले तो मिले। (कुछ आगे बढ़के) अल्लाह, ये तो शराबी हैं।

[भागना।

४था म०। अरे यार एक औरत है।

२रा म०। अरे हां रे! नौजवान, हसीन, बरस सोलह एक की।

१ला म०। यारो, मामला हाथ से निकला जाये है, देखते हो, क्या पकड़ो पकड़ो।

सबके सब। चोर भागा जाता है। पकड़ो पकड़ो।

सब का जाना, और सुम्बुल को पकड़ के ले आना।

१ला म०। डर क्या है, जानी? भागती क्यों थीं?

२रा म०। (गिलास में शराब भरके) जानी, अपने मुंह शरीफ़ में ज़रा सी शराब डाल लोगी?

३रा म०। (गिलास छीन कर) अरे पाजी का जना, यह शोख़ो, यह एक भले आदमी के घर की लड़की है, सूझता नहीं? इतनी शोख़ी क्यों करता है।

सुम्बुल। (जी में) ख़ुदा, इन से मैं पूछे आई हूं, उसी की यह सज़ा है।

१ला म०। अरे तुम लोग यहां से ज़रा चले तो जाओ। यह डरती है।

३रा म०। गुरू सच कहियो। "अंधा खोजे दो आंख।"

१ला म०। अरे, नहीं रे नहीं। (कान में कुछ कहना।)

३रा म०। अच्छा ख़ैर, मगर साले दग़ा मत कीजियो।

(पहले मतवाले और सुम्बुल को छोड़के
और सब का जाना।)

मत०। डर क्या है, जान साहिब? हम ने अभी तक व्याह नहीं किया है। हम तुम ही से व्याह करेंगे—सच कहते हैं सिवा तुम्हारे और किसी से व्याह नहीं करेंगे—और खूब प्यार करेंगे। ख़ौफ़ क्या है? तुम कहां से आती हो, जानी?

सुम्बु०। देखिये, मैं बड़ी दूर से चली आती हूं मुझे बड़ी भूख लगी है। हमें कुछ खिलाइये।

मत०। अच्छा न, क्या खाओगी जानी?

सुम्बु०। जी खिलाइये। (ग़ोर करके) हमें ख़रबूज़ा बहुत पसंद है। अगर हो सके तो एक ख़रबुज़ा ला दीजिये।

मत०। जानो, एक को कोन पूछता है, कहो तो तुम्हारे लिये २० ठो ला दें। माली ने आज ही तो तोड़ के रक्खा है। तुम्हारे लिये क्या नहीं ला सकता हूं, जानी।

सुम्बु०। तब मिहरबानी करके कुछ खाना और दो ख़रबूज़े ला दोजिये। और देखिये, कोई दूसरा छीलके देगा तो मैं नहीं खाऊगी। मैं अपने ही हाथ से छील के खाऊगी, सो अगर मिल जाये तो मिहरबानो करके एकाद छुरी भी लेते आइयेगा।

मत०। प्यारी, यह तो बगीचा है। यहां छुरी कहा मिलेगी? यहां तो एक हसुआ है। उसी से हम सब भी बोतल का मुंह तोड़ते हैं। कहो तो उसी को लिये आवें?

सुम्बुल। मुज़ायका क्या? उसी को लेते आइयेगा।

मत० । ज़रा सी शराब पियोगी, जानसाहब ?

सुम्बु० । पहले खाना तो ले आइये, फिर देखा जायेगा ।

मतवाले का जाना, और हंसुआ, खाना,

वगैरह लिये प्रवेश ।

मत० । लो जान साहब, जो जो मांगोथिव सब लाके हाज़िर किया ।

सुम्बु० । तब ज़रा आप तक्लीफ़ करके बाहर जा रहते तो बड़ी मिहरबानी होती । मुझे मर्दों के सामने खाते बड़ी शर्म मालूम होती है ।

मत० । लो जानी, भला यह कैसी बात ! ताबेदार को परशाद नहीं मिलेगा ? जान साहन, भला अकेली अकेली खाओगी ?

सुम्बु० । जी नहीं, मुझे न मालूम क्यों बड़ी शर्म मालूम होती है । आप ज़रा बाहर जा रहिये । मैं तुरत खा लेती हूं ।

मत० । अच्छा जानी तुम्हारी ही बात सही । प्यारी, तुम पर जान सदका है, भला तुम्हारी बात उठ सकती है ? अच्छा जानी, हम बाहर जाते हैं, तुम खाओ ।

मतवाले का बाहर जाना, और सुम्बुल का किवाड़ी बंद करके सिकरी चढ़ा देना ।

नेपथ्य से मत० । जान यैह क्या ? किवाड़ी क्यों बन्द कर दियो ?

सुम्बु० । जी, यों ही । शायद कोई सामने आ वा जाय, तो फिर मैं खा नहीं सकूंगी । आप ज़रा बाहर ही रहें ।

नेपथ्य से मत० । कुछ डर नहीं जानी । क्या मजाल कि कोई भीतर जाये । प्यारी, तुम पर जान कुर्बान है, ज़रा मिहरबानी करके हमारे लिये भी परशाद रखना ।

सुम्बु० । (हंसुआ लेके मुसुकती) अब दिल भर रोने के लिये भी वक्त नहीं है । सज्जाद ! अब मरती हूं, मगर हाय मरते वक्त तेरी मूरत नहीं देखी ! अम्मा, अब तेरी कमबख्त बेटी इस दुनिया से रुख़सत होती है । खुद-कुशी गुनाह तो है, मगर क्या करूं औरतों के लिये इज़्ज़त से बढ़ के कोई चीज़ नहीं है । खुदाया ! मैं लाचार हूं, हमारे गुनाह को बख़्श । (रोती रोती) सज्जाद, तुझ को मैं प्यार करती थी—अपनी जान से भी ज़ियादे प्यार करती थी । हाय, एक नज़र भी तुझ को इस वक्त देखती—अब अफ़सोस करने से क्या होता है । (रोती रोती—आंख बन्द करके) देखो मतवाले, देखो मैं कैसा खाना खाती हूं ।

(गले में हंसुए का लगाना, और गिरना ।)

छठा अंक।

पहली झांकी।

राज महल के पास की पहाड़ी जमीन।

कई एक कुलियों के साथ बाबू हेम चन्द्र का प्रवेश।

हेम०। पूर्वे शमुद्र एई स्थान पर्य्यन्त बिस्तृत छिलो। शुतरां मृत्तिकार कोनो ना कोनो स्तरे शामुद्रिक जन्तुर अस्थि कंकाल प्राप्त हवा जाइते पारे। शेई अनुशन्धानेई आमार ए खाने आशा। (कुलियों से) तोम लोग शब कोई मिल के माटी खूंड़ो, कोई हाड़ खड़ पाने शे हाम को थान के दो।

(कुलियों का वैसा ही करना।)

१ला कुली। लेहु न बाबू, एगो हाड़ एही तो हकई।

हेम०। (लेके ए तो देखबो हाथेर अंगुलिर हाड़। मनुष्येर बोले बोध होय ना। थाक, कलिकाताय निया गिया भालो कोरे परीक्खा कोरा जाबे। खोदो, खोदो, आर खोदो।

२रा कुली। ए बाबू, हियां के मटिया फुलल फुलल बुझा' हइ। बाबू, एकरा खोदियई की?

हेम०। हां हां खोदो, देखो ओसका भीतर में क्या हाय?

२रा कुली। बाबू हियां तो बड़गो ऐसन एगो पत्थर चांपल हइ।

हेम०। दो तीन आदमी मिल के ओसको ओटाय के फेल दो।

(कुली लोग वैसा ही करते हैं।)

भीतर से। यह क्या, यह रोशनी किधर से आई?

कुली लोग। अरे, के दो भित्तर में बतिया हइ।

भीतर से। है, यह तो सूरज की रोशनी है! इलाही! इस दोज़ख़ से रहाई हुई क्या? दो रोज़ और बंद रहते तो न बचते।

(गढ़े में से सज्जाद ऊपर चढ़ना चाहता है।)

कुली लोग। (डरके) ए बाबा, ई भुंईफोड़ भूत रे—ए। बाबा मथवा केतबड़ हई देख भाग रे, भाग रे।

[कुलियों का भाग जाना।

हेम०। (डर और खुशी से) ए कि प्रकृतिर आवर्तने भू मध्ये कोनो नूतन जीवेर सृष्टि होलो ना कि? यदि ताई होय, आमार नाम चिरस्मरणीय होबे। आमि प्रथम आविष्कार कोरेछो।—किन्तु एकटू ओरे डाड़ानो भालो कि जानी जोदो हिंस जन्तु होय। विज्ञानेर जन्ने कि आमार बहुमूल्य मनुष्य जीवन हाराबो?

(कुछ पीछे हट जाना।)

सज्जाद। (ऊपर आके) शुक्र है, शुक्र है अल्लाह तआला की दरगाह में। आज बहुत दिनों के बाद आदमी की सूरत देखने में आई है। अहा बाबू—

हेम०। (डर से कुछ और पीछे हटके) आरे तोम कोन हाय, मानुषेर मत कोथा कोहे जे, खाबरदार हामारा पाश में तोम मत आ। खाबरदार, इधर मत आ।

सज्जा०। वाह ये तो हेम बाबू हैं। क्यों बाबू हमें आप पहचानते नहीं?

हेम०। बा:, खूब बोलते पारे देखची। तोम क्या मानुष हाय? बोलो, तोम आदमी है? ना। एकटा आधटा प्रमाणे कुछू बिश्शाश कोरा उचित नोय। जुक्ति शास्त्रेर नियम बिरुद्ध। हाथ पा मानुषेर नेयो एक टू लम्बा बोले बोध होच्चे। तोम को दुम है कि नहीं, देखे तोम घूम जाओ तो, हाम तुमरा दुम देखने मांगता है।

सज्ज०। आप पागल हो गये हैं क्या? हज़रत, मैं सज्जाद हुसैन हूं। मुझे आप पहचानते नहीं?

हेम०। (धोती संभालते संभालते) देखो खाबरदार आगे मत बाढ़ो। (डर से और पीछे हटना।) देखो तोम हुई शे बात करो, आगे मत बढ़ो। आच्छा शज्जाद हुशेन तो शंस्कृत जानता था, तोम शंस्कृत का वर्णमाला पढ़ो तो, क, ख, ग।

सज्ज०। तोबा, अच्छी आफत में फंसा हूं। लो—क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ—

हेमु०। जाच्छा थाम। फांकी दिये दांत देखे निइची। दांत गुलो ठोक मानुषेर मत। (कुछ आगे बढ़के) तोम हाम को काटेगा तो नाहें

सज्ज०। तुम्हारा सर चबा जाऊंगा।

हेम०। ओ बाबा, बिज्ञान माथाय रोइलो।

[भागता है।

सज्जा०। ए हेम बाबू सुनिये सुनिये,—काटूंगा नहीं, नहीं काटूंगा।

(हेमचन्द्र का पुनः प्रवेश।)

सज्जा०। क्या आप दीवाने हो गये हैं?

हेम०। आच्छा तोम आगे का कोनो बात बोलो, तोब हाम तोमरा बात को एतमाद कोरेगा।

सज्जा०। "साइन्टिफिक ऐसोसियेशन" में आप ने कभी इस मज़मून पर लेक्चर दिया था या नहीं कि "आदमी बन्दर की औलाद हैं।" (जी में) सो और कोई हो या न हो, मगर तुम तो बेशक वही हो।

हेम०। हां हुआ, हुआ। आप ठीक शाज्जाद हुशेन है। किन्तु आप हामारा बड़ा लोकशान किया। हाम आप का दारा एक बड़ा डिस्कवरी किया था। आच्छा, आप एश का भीतर में किश लिये ढूका था?

सज्जा०। कई एक बदमआशों ने मुझे यहां क़ैद करके रक्खा था। खैर वह सब हाल मैं आप से कह सुनाउंगा, हमारे मकान की ख़बर कुछ आप को मालूम है?

हेम०। हां कुछ कुछ हाम जानता है। बड़ा खाराप खाबर है। बेहार का शामशेर बाहादुर आप का शब धन आर जायदाद ले लिया। आप का बीन आर आब्बाश हूशेन का पाता नाई लेगता। आर एक ठ मजिस्ट्रेट के बिरुद्ध में आप एखबार में लीखा था ओश का वाशते आप का नाम शे वारंट है।

सज्जा०। वाह खुशख़बरी की गोया बारिश बरस रही है। बग़ावत के उर्गलान वाले मुक़द्दमे का क्या हुआ?

हेम० । नाई, शेरिफ मजिस्ट्रेट हातक एज्जत का नालिश कीरा।

सर्जन० । नालिश पटने ही में हुई थी ?

हेम० । हां ।

सज्जा० । सुम्बुल, जिस के बारे में मैंने अख़बार में इश्तिहार छपवाया था, उस की ख़बर कुछ आप को मालूम है ? उस का कोई पता लगा या नहीं ?

हेम० । हाम ईश का हाल अच्छी तरह शे बोलने नेई शकता— मालूम होता है कि कोई पाता नाई लगा।

सज्ज० । हमारी बहन के बारे में क्या फ़रमाया ?

हेम० । कोई बदमाइश शामशेर बहादुर कांहां ले जाय के कोश की राक्खा है।

सज्ज० । ऐं, कहते क्या हैं ?

[दोनों गये ।

दूसरी झांकी।

बिहार, ख़ानक़ाह, शमशेर बहादुर की हवेली की एक कोठरी ।

अब्बास सिकरी में बंधा पड़ा है, और सामने शमशेर बहादुर खड़े हैं ।

शम०। अगर दो काम कर तो तेरी जान बचती है।

अब्ब०। क्या, क्या ?

शम०। एक तो यह कि——--तू हमें लिख दे कि मैंने अपनी सब जायदाद क्या मन्क़ूले और क्या ग़ैर मन्क़ूले शमशेर बहादुर को बिलाइवज़ दे दी।

अब्ब०। मन्ज़ूर है। और ?

शम०। और यह कि एक महीना पहले की तारीख़ लिख के तू हमें इस मज़मून का अपनी मा के नाम से, यानी हमारी बीबी के, एक ख़त लिख दे कि मियां सज्जाद की बहन पर मुझे शक होता है।

अब्बा०। (गुस्से से) बेगुनाह, रास्त, भोली गुलशन पर शक ? जिस वक़्त तेरे मुंह से यह बात निकली, तू ग़ारत न हो गया ?—इस में तुझे क्या नफ़ा है ?

शम०। (गुस्से से) नफ़ा यही है। एक बाकरे की निकाल लाना, और फ़ाहिशे की निकाल लाना, अंगरेज़ी आईन के रू से दोनों में बहुत फ़र्क़ है।

अम्ब०। (जी में) अल्लाह, अगर हमारे हाथ पांव इस वक़्त बंधे न होते तो इस के सर को मैं अभी मारे घूसों के तोड़ डालता। (प्रकाश) जब तक मुझ में जान है, तब तक मैं ऐसा नहीं लिखने का।

शम०। (गुस्से से) तुझे ये दोनों बातें ज़रूर ही लिख देनी पड़ेगी। (दांत पर दांत मसमसाके) अगर नहीं लिख देगा तो अभी तेरा काम तमाम करता हूं।

अम्बा०। (बड़े गुस्से से) कमबख़्त, दोज़ख़ी, तू कभी इस तरह का ख़याल भी मत कर कि हमारा बदन तेरे इख़्तियार में है तो हमारा दिल भी तेरे इख़्तियारमें होगा—यह नहीं तेरे इख़्तियारमें है। और तू इस बात को यक़ीनन जान लेकिन मियां सज्जाद तेरे इस ज़ुल्म का बदला लेंगे पै लेंगे।

शम०। (मुस्कुराके) तेरा सज्जाद है कहां, तू जानता है?

अम्ब०। कहां है?

शम०। जेलख़ाने में। राजमहल, या कहां जो भागके छिपा था, सो सरकार ने वहीं गिरफ़्तार कराके क़ैद किया है।

अम्ब०। उन की रिहाई की कोशिशें भी तो आख़िर होती होंगी?

शम०। अब क्या उस के पास रुपये हैं, कि जिस को वंजह से लोग उस की तरफ़ से लड़े? उस दफ़े की तो मैंने पहले ही से रफ़ा कर रक्खा है।

अब्बा॰। गुलशन कहां है?

शम॰। इस से तुझे क्या काम? अरे तू पहले अपनी तो ख़बर ले। तुझे औरों की क्या फ़िक्र है? बेफ़ाइदा वक़्त हमारा ज़ाया न कर, मुझे जल्द बता कि जो मैंने अभी कहा, वह तुझे मन्जूर है या नहीं?

अब्बा॰। नहीं मन्जूर है। हिन्दुस्तानी बुज़दिल तो होते हैं, मगर इहसान-फ़रामोश नहीं होते। अपने मुहसिन के वास्ते हर तरह की तक्लीफ़ गवारा करते हैं। जो सज्जाद हमारी मुसीबत में काम आया था, उसी के बहन की मैं बदनाम करूं? तूने क्या सब ही को शमशेर बहादुर समझ रक्खा है?

शम॰। क्यों रे बदज़ात, (अब्बास के सीने पर लात रख के) तुझे लिखना मन्जूर है या नहीं? कह जल्दी। देख तूने इन्कार किया और मैंने मार ही डाला।

भेस बदले हलीमा का प्रवेश और शमशेर बहादुर को पीछे से मार के गिराती है, और भाग जाती है।

शम॰। (डर से) ख़ुदाबन्दा! यह क्या, यह क्या! (उठ के) ओर, बता तू लिख देगा या नहीं? अब भी कहता हूं, लिख दे, लिख दे, नहीं तो—

(किवाड़ी में कोई धक्का देता है।)

शम॰। कौन है?

(फिर किवाड़ी में कोई धक्का देता है।

शम॰। कौन है, जवाब क्यों नहीं देता?

नेपथ्य से । जी हम हैं, रहमत ।

शम० । क्या चाहता है ?

नेपथ्य से । हजूर एक ठोक खत है ।

शम० । बाहर दालान में जा के रख दे ।

नेपथ्य से । जी लाइस है वह, कहे है कि पढ़के जवाब तुरन्त दें नहीं तो अच्छा नहीं होगा ।

शम० । एँ, अच्छा नहीं होगा ! सो क्या ! खुदा खैर करे !

[गया ।

अब्ब० । अब मुझे कोई उम्मीद बाकी न रही । मियां सज्जाद खुद कैद हैं, उन की दौलत भी इसी के हाथ में है, बाकी रहीं सुम्बुल और गुलशन सो इन दोनों का भी पता नहीं है । (आह भरके) इन ही दोनों की ज़ियादह फ़िक्र है ।

(चीठी लिये शमशेर बहादुर का पुन: प्रवेश ।)

शम० । इस ख़त को किस ने लिखा ? अल्लाह कुछ भी समझ नहीं पड़ता । खोल के देख ही क्यों न लूं । (चीठी की दो एक पांती पढ़ते पढ़ते कांपना ।) सब मिट्टी हुआ ! सुना था कि डूब के मर गई ! अब तो मैं गया ! न जाऊं, तब भी नहीं बनता ! खुदावंदा क्या करूं ?

[कांपता कांपता गया ।

अब्ब० । कांपता कांपता फिर गया क्यों ? खुदा अब तो कुछ कुछ उम्मीद बंधती है । लेकिन कहां क्या हो रहा है, कुछ भी समझ में नहीं आता ।

(हलीमा का प्रवेश।)

हली०। ताला बंद करने को भूल गया है। मैं तुम्हारी सिकरी खोले देती हूं। (सिकरी खोलने की कोशिश।) (सुर पर हाथ ठोक के) हाय रे करम, यह कैसी सिकरी है! इस में तो ताला लगा है। मगर तुम्हें कुछ खौफ नहीं मैं जैसे बने तुम्हें बचाऊंगी। जाना चाहती है।

अब्ब०। एक बात ज़रा सुन लीजिये। गुलशन की कोई खबर मिली है?

हली०। मिली है। उस का एक बाल भी बांका न होने पायेगा। डरो मत।

[गई।

(शमशेरबहादुर का फिर प्रवेश।)

शम०। तुझ को यहां नहीं रहने दूंगा। चल भीतर चल।

अब्ब०। हमारे हाथ पांव तो बंधे हैं, मैं क्यों कर जाऊं?

शम०। हाथ पांव के बंधे रहने से क्यों कर चलते हैं, तुझे नहीं मालूम? देख।

[लात मारता और लुधड़ाता अब्बास को ले गया।

——

तीसरी झांकी

बिहार, एक छोटा सा मकान।

(एक स्त्री और एक लड़के का प्रवेश।)

लड़का। अम्मा, मुझ को इस भेस से बड़ी शर्म मालूम हो रही है।

स्त्री। हो बेटी, शर्म कैसी ? इतनी दूर आ कर अब शरमाने से काम नहीं चलेगा। सिर्फ़ तुम्हारे ही लिये न इतनी दूर आई हूं ? अब देखो। —

लड़का। (शरमा के) अम्मा, अब ज़ियादा हमें न शरमाओ। अब और कितनी दूर तक चलना पड़ेगा ?

स्त्री। यहीं डेरा मिले तो मिले।

(हलीमा का प्रवेश।)

हली०। (खुश हो के) ये ही तो हैं।

स्त्री। (हलीमा को इशारा कर के) हमलोग कुछ दिन तक यहां रहना चाहते हैं, कोई मकान किराये में मिल सकता है ? (फिर इशारा करती है।)

हली०। हां, मकान क्यों नहीं मिलेगा ? मगर किराया पेशगी चाहिये। क्यों कि तुम लोगों को मैं पहचानती नहीं।

स्त्री। हां हां किराया पेशगी ही ले लेना, मगर ज़रा मकान तो दिखलाओ। (एक किनारे हलीमा से) तुझे वह पहचानती नहीं। पहचानती तो आती नहीं। काली प्रसाद आये हैं ?

हली०। आये हैं। आओ, मैं मकान दिखला दूं।

(सब के सब गये, और कुछ ठहर के काली प्रसाद का और उस स्त्री का प्रवेश।)

का०। (पर्दे के बाहर से) वह लड़का कौन है, हमें बतला दीजिये।

स्त्री। तुम्हें पीछे आप ही मालूम हो जायेगा।

का०। मालूम होता है कि उस लड़के को हम ने कहीं देखा है। वह आप का कौन है ?

स्त्री। हमारा कोई नहीं है। हमें योंही "अम्मा" "अम्मा" कह के पुकारे है। खैर कागज़ पत्तर सब लिख पढ़ के तय्यार रक्खे हो ?

का०। सब तय्यार है।

स्त्री। सज्जाद ?

का०। जेलखाने में।

स्त्री। कलकत्ते में अपील हुई है ?

का०। जिस दिन आप का ख़त यहां पहुंचा, उसी के दूसरे दिन अपील हो गई। देसी अख्बार जितने हैं, सब हम ही लोगों की तरफ़ हैं। बहुतेरे बिहारी वकील भी मुफ़्त में हम लोगों की तरफ़ से बहस करते हैं। वकील लोग तो कहते हैं कि कुछ नहीं होगा। बहुत होगा तो रुपया हज़ार एक जुर्माना होगा। मियां

सज्जाद ने तो अपने हाथों अपने पांव कुल्हाड़ी मारी है। अपना कुसूर इक़रार कर लेते तो कुछ नहीं होता। तब सो तो हुआ नहीं उलट के हाकिम को जवाब क्या दिये कि—"ज़ालिम सुफ़ैद रूओं के ज़ुल्म से मज़लूम हमवतनों को बचाने के लिये मुझे अपनी जान भी कुर्बानी करनी पड़े तो वह भी बन्दे को बहरहाल मंज़ूर है।" यह सुनते ही तो हाकिम भूत हो गया।

स्त्री। देखो, ख़बरदार सज्जाद को न मालूम हो कि मैं उस की रहाई के लिये पैरवी करती हूं।

का०। बहुत ख़ूब।

स्त्री। शमशेर बहादुर को बुलवाये हो?

का०। जी हां, आ चला।

स्त्री। देर होती है, फिर किसी को भेजो।

[काली प्रसाद गये।

स्त्री। (गाल पर हाथ रख के गौर करती हुई) देखिये क्या होता है।

(शमशेर बहादुर का प्रवेश।)

शम०। (पर्दे के बाहर से) आ-प-ने मुझे क्यों—(कांपना।)

स्त्री। (गुस्से से) नमकहराम, दग़ाबाज़, पाजी, क्यों बुलाया है, तुझ को अभी तक नहीं मालूम हुआ है?

शम०। आ-प- तो डू-ब-—(कांपना।)

स्त्री। मैं डूब के मर गई, तू ने समझा था?

काली प्रसाद का फिर प्रवेश।

स्त्री। दीवान जी, दस्तावेज़ कहां है ले आओ।

का०। जी साथ ही है।

स्त्री। (शमशेर बहादुर से) उस पर दस्तख़त कर दे।

शम०। (डर के) क्या दस्तख़त करूं? उस में क्या लिखा है।

स्त्री। दीवान जी, पढ़ के सुना दो।

का०। इस में लिखा है "मैं कि सय्यिद शमशेर बहादुर, वल्द सय्यिद फ़य्याज़ बहादुर, साकिन डिवीज़न बिहार हवली क़स्बा बिहार, ज़िले पटने का हूं। इक़रार करता हूं कि बीबी महमूदा ज़ौजे सानी-इ-सय्यिद ख़ैरात हुसेन मुतवफ़्फ़ा पिदर-इ-सय्यिद सज्जाद हुसैन साकिन डिवीज़न बिहार परगना अंबेर ज़िला पटना ने अपनी कोई जायदाद मन्कूले या ग़ैर मन्कूले बज़रीए वसीयत नामे के मुझे अता नहीं की है। अदालत में बीबी मौसूफ़ा का दस्तख़त किया हुआ जो वसीयत नामा पेश किया है, वह जाली और फ़िलासी है।"

शम०। सज्जाद ने तो आप को अपने मकान से निकलवा दिया था, फिर आप क्यों उस के लिये इतनी पैरवी कर रही हैं?

महमूदा। सज्जाद ने हमें मकान से नहीं निकलवाया था, मैं ख़ुद चली गई थी। दीवान जी, दूसरी बात भी पढ़ के सुना दो।

का०। "बीबी महमूदा मज़्कूरे बाला पर जो शक किया गया था वह बिलकुल दरोग़ और बेबुनियाद था। बीबी हलीमा ज़ौजे शमशेर बहादुर बिरादर कलां हक़ीक़ी मुतवफ़्फ़ा से बीबी महमूदा मज़्कूरे बाला के अज़ इब्तदाय हालत-इ-तिफ़्ली अज़हद दोस्ती थी। सन १२७८ फ़स्ली मुताबिक़ सन १८७१ ईसवी में बीबी हलीमा मज़्कूरे बाला बड़ी बीमार थीं। इसी वजह से बीबी महमूदा मज़्कूरे बाला बलिहाज़ दोस्ती उन्हें देखने के लिये चार दिन तक हमारे यहां आई

गई। इसी से शक-इ-मज़कूरे वाला की बुनियाद पड़ी है। सिवा इस के और कोई अमर नहीं है। उन के पाक जिस्म पर किसी गुनाह का साया भी नहीं पड़ा है।"

मह०। लो, जल्दी दस्तख़त कर दो। नहीं करोगे तो प्यादों को बुलवा के बेइज़्ज़त करवाऊंगी। इस पर भी नहीं मानेगा तो थाने में भेजवा दूंगी। हमारे रहते हमारे नाम का जाल दस्तावेज़ बनवाया है?

शम०। (डर से) जी, मैं आप की राय से ख़िलाफ़ नहीं हूं जो हुक्म कीजियेगा, ज़रूर बजा लाऊंगा।

मह०। ख़ैर तो दस्तख़त कर दे।

शम०। (जी में) अब चारा क्या है। (दस्तख़त करता है) (प्रकाश) मगर सज्जाद हम पर नालिश करे तब?

मह०। वह नालिश नहीं करेगा, मैं समझा दूंगी। अच्छा तू अब रुख़सत हो मेरे सामने से।

शम०। (जी में) ख़ैर मैं बदला ले लूंगा।

[गया।

मह०। कागज़ों को अच्छी तरां से रखना सज्जाद जब छूट आवे, तो उसे दे देना।

[कालीप्रसाद गये।

(हलीमा का फिर प्रवेश।)

हली०। (घबराई हुई) बहन, यह क्या किया? उसे जाने क्यों दिया?

मह०। क्यों क्यों?

हली० । अब्बास और गुलशन को कैद किये हुए है।

मह० । अल्लाह, यह क्या आफ़त ! तुम ने तो हम से इन का कुछ भी ज़िक्र न किया ?

हली० । वक़्त कहां मिला ?

मह० । अब कौन सी तदबीर हो ?

हली० । अब तदबीर क्या हमारा सर होगा ? तुम जल्दी थाने में ख़बर भेजवाओ। मैं आगे बढ़ती हूं। आज वह ज़रूर ख़ून करेगा, उसे मैं ख़ूब जानती हूं।

मह० । अच्छा, बहन तुम आगे बढ़ो।

[दोनों गईं ।

४ थी झांकी ।

ख़ानक़ाह शमशेर बहादुर का मकान ।

[अब्बास सिकरी में बंधा पड़ा है ।]

अब्ब० । एक बारगी जान से मार ही क्यों नहीं डालते हैं ? अब तो यह तक्लीफ़ बरदाश्त नहीं होती।

(हाथ में किर्च लिये शमशेर बहादुर का प्रवेश)

शम० । इस बेइज़्ज़ती का बदला ज़रूर लेना चाहिये। सब दरवाज़े तो बंद कर ही दिये हैं। जो करना है, वह कर के कहीं

भाग जाऊंगा । रुपये से क्या नहीं हो सकता ? दोनों हाथों से रुपये लुटाऊंगा। आख़िर नाना साहिब अब तक क्यों कर बचे हुए हैं ? (अब्बास से) क्यों रे, तू गाना जानता है ?

अब्ब० । (अचभे में आके) क्यों ?

शम० । गाना ही तो गाले, गाता गाता बहिश्त की राह ले। इस दुनिया में तेरा आख़री दिन यही है।

अब्ब० । मारना है तो जल्द मार भी डाल । मगर याद रखना कि इस काम का नतीजा भी तुझे हाथों हाथ ख़्वाह इसी दुनिया में या उस दुनिया में ज़रूर ज़रूर मिलेगा।

शम० । तब फिर ले । (मारना चाहता है ।) नः, मरता ही है तो उसे भी देख ले ।

(गया, और गुलशन को ले के फिर प्रवेश ।)

गुल० । अब्बास यहीं है ? (रोके) अब्बास, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ ! (शमशेर बहादुर से) मुझे मुआफ़ कीजिये, मुझ पर मिहरबानी कीजिये । लौंडो को छोड़ दीजिये—

शम० । (हंस के) तुम्हें नाज़िनी क्यों कर छोड़ूं ? समझा के कहा तो राज़ी न हुई, तो अब ज़बरदस्ती से तो राज़ी होओगी ? (गुलशन को चूमा लिया चाहता है ।)

गुल० । (रो के) या अल्लाह, कोई ऐसा नहीं है, जो मुझे बचावे ? (गुलशन के धक्का देने से शमशेर बहादुर का गिरना ।)

शम० । तब क्यों रे हरामज़ादी ? (गुलशन को पकड़ना चाहता है ।)

अब्बास । (बहुत ज़ोर से चिल्ला के) ख़ुदा इस पाक औरत

को इस गुनहगार दोज़ख़ी से बचा । (सिकरी तोड़ने की कोशिश ।)

(हलीमा का प्रवेश ।)

हली० । (किर्च उठा के) वाः शुक्र है, खुदा ! (किर्च से शमशेर बहादुर को मारती जाती है ।) पूरब तरफ़ वाली खिड़की बाहर से खुलती है, यह भूल गया था ?

(गुलशन और अब्बास का बे होश हो जाना, बहुत खून के निकलने से शमशेर बहादुर का भी बे होश हो जाना ।)

हली० । (हाथ में किर्च लिये थर थर कांपती हुई ज़ोर से हंसती है :) हाः हाः हाः क्या मज़ा हुआ ? लोगो, एक मज़ा और देखो । (अपनी छाती में किर्च भोंक के गिरी और मर गई ।)

(शमशेर बहादुर को होश होना और घाव की तक्लीफ़ से कंहरना ।)

(घबराहट से रोती रोती नसीमन का प्रवेश ।)

नसी० । है है यह क्या हुआ ! (ज़ोर से रोती हुई) हमारा नसीब जल गया शायद ! इसी लिये न तुम ने मुझे उस मकान में चले जाने कहा था ? (रोती है ।)

शम० । बड़ी तक्लीफ़ हो रही है ।—मुंह से बात नहीं निकल सकती ।—या अल्लाह, मैं तो अब मरा ।

नसी० । (रोके) प्यारे, ऐसी बात मुंह से न निकालो । तुम्हारे मुंह से ऐसी बात सुन के हमारी छाती फटती है ! तुम बच जाओगे, ज़रूर बचोगे । या हज़रत मख्दूम, या टिकिया साईं, या पीर मुर्शिद ! यह अब की बच जायें तो मैं खुद तुम्हारी दरगाहों में जा

जा के नाक रगड़ूंगी, और जो कुछ हमारे पास है सब चढ़ाऊंगी इन को बचा दे अल्लाह ।

शम० । बेवकूफ़—बेवकूफ़ नहीं देख तो ?—अब उम्मीद नहीं है । जैसा किया वैसा पाया ।—दूसरों को फंसाना चाहता था, मगर खुद फंस गया । ऐसा फंसा कि जान ही गई । अब नहीं बचूंगा—अब नहीं ।

नसी० । प्यारे, मैं तुम्हारे पाओं पड़ती हूं ऐसी मनहूस बात मुंह से न निकालो । (अब्बास को देख कर ज़ोर से रोना ।) या खुदा, यह क्या हुआ ? (अब्बास का हाथ थांभ के) अरे बेटा अब्बास इन को बचा दे, बचा दे रे, बचा दे ।— हिलता डोलता क्यों नहीं, हाय तुझ को क्या हुआ ?

(अब्बास और गुलशन को सुध होना ।)

शम० । मेरे—इज़ारबंद में—उस ज़न्जीर की—कुंजी बंधी है—खोल दो ।

(नसीमन वैसही करती है, और रोती जाती है ।)

शम० । (तक्लीफ़ से) मैं मरा,—मैं मरा । (अब्बास से) बेटा अब्बास, मुझ पर मिहरबानी कर के मुझे मुआफ़ कर । (गुलशन से) बेटी, तू भी मुआफ़ कर, मैं तौबाह करता हूं । इस दुनिया में तो हमारी बुरी हालत रही ही कहीं ऐसा न हो कि तुम लोगों की बददुआ से हमारी आक़बत भी बिगड़े ।

अब्बास । (ग़मज़दा आवाज़ से) लड़कपन से मैं आप ही के यहां पला हूं, आप हमारे वालिद के दाख़िल हैं । हमारे पास मुआफ़ मांगना आप को लाज़िम नहीं । जो मुआफ़ कर सकता है, जो रहीम है, जिस के सामने तौबाह करने से, जो आप के गुनाहों, को

बख़्श दे सकता है, उस से मुआफ़ माँगिये, उस के सामने तौबाह कोजिये।

नसो०। अरे बेटा अब्बास, तू भी वैसी ही बात करता है रे? तो क्या अब सचमुच उम्मीद नहीं है, अब क्या कुछ भी उम्मीद नहीं है?

अब्बास। अम्मा, हम कुछ नहीं कह सकते। सब खुदा के हाथ है।

शम०। बेटा, तुम अपने आठी हज़ार रुपये फेर लीजो। गुलशन के लिये चार हज़ार रुपये कहे जाता हूं। बाकी सब तुम्हारे मा के नाम से रहा।

नसी०। मुझे तुम्हारे रुपयों की ज़रूरत नहीं। मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी। मुझे साथ लिये चलो, मैं तुम्हारे बग़ैर नहीं रह सकूंगी।

शम०। बेटा, हमारी आक़बत की ख़बर रखना। हमारे नाम से ख़ैरात नियाज़ दिया करना। (कष्ट की वृद्धि) (नसीमन से) अब मैं रुख़सत होता हूं।—हाय, हाय, भर ज़िन्दगी में कभी तुम से खुश हो के न बोला। तुम से बहुत ही बुरी तौर से पेश आता था।—बड़ा बुरा काम किया—

नसी०। मेरे खाविन्द, मैं उसी से खुश थी। अब कौन मुझ से उस तरह से भी पेश आयेगा? देखो, मुझे छोड़ न जाओ, साथ लिये चलो।

शम०। अ—ब—स—, मु—आ—फ़—

(बायके झोंक में हाथ पाओं का पटकना, और जान का निकल जाना। नसीमन का ज़ोर से रोना, और अब्बास और गुलशन का

समझाना, नसीमन का बेहोश होना, फिर होश में आना, और रोते रोते लोहू कै करना, और शमशेर बहादुर की लाश पर गिर के मर जाना।)

अब्बास। (नसीमन की नब्ज़ और बदन को देख के रोवासी आवाज़ से) हाय अम्मा, तुम भी रुख़सत हो गई? ऐसी पार्सा औरत का हाल आज नादिर सुना जाता है। हरचंद शौहर हमेशा बुरा ही कहता आया, और तक्लीफ़ ही देता आया, पर तो भी तुम्हारी मुहब्बत उन पर ज़रा भी न घटी। सती होने का हाल जो सुनता था, सो आज आंखों देखा।

(दाइयों का प्रवेश, और रोना।)

चलो, बाहर ले चलो।

[सब का प्रस्थान।

पांचवीं झांकी।

बिहार, अंधेर, सज्जाद का मकान।

सज्जाद, अब्बास, और गुलशन का प्रवेश।

सज्जाद। (आह भर के) भाई अब्बास, सुम्बुल का कोई पता न लगा सके? कोई पता नहीं?

अब्बास। सारे हिन्दुस्तान में आदमियों को भेजा है। तमाम तारबर्क़ी में ख़बर भेजी है। शहर शहर, गांव गांव, थाने थाने, सारा, मस्जिद, दरगाह, रेलवे स्टेशन ऐसी कोई जगह नहीं जहां न ढुंढवाया हो। सिर्फ़ इसी क़दर नहीं, छोटे बड़े सब अख़बारों में—बिहार-बन्धु, अवध-अख़बार, बनारस-अख़बार, कविबचनसुधा, जाम-इ-जमशेद, हिन्दुपेट्रियट, इन्डियन मिरर, इंगलिशमैन, पायोनियर—और कितना बताऊं, सब ही अख़बारों में यह इश्तिहार छपवा दिया है कि जो कोई शख़्स उन की ख़बर लाके देगा, उसे २०००) रुपया इनआम दिया जायेगा। मगर कोई कोशिश कामयाब न हुई। (ठंडी सांस का लेना।)

गुलशन। (सुम्बुल की इशारा करके रोती रोती) आपा, हम लोगों ने कौन क़सूर किया था, कि तुम छोड़ के चली गईं? मैं तुम से लड़ती थी, क्या इसी लिये तुम चली गईं, आपा? आपा, वह तो प्यार की लड़ाई थी, इतना भी तुम न समझ सकीं? भइया ने भी तो तुम्हें कुछ नहीं कहा? जब से तुम यहां से चली गई हो तब से भइया बराबर बीमार हैं। ज़रा इन पर तो रहम करतीं। तुम्हारे लिये भइया ने कैसी कैसी मूसीबतें झेली हैं, और आफ़तें उठाई हैं? आपा, अब भी इन पर मिहरबानी करो।

सज्जाद। (अब्बास से) "सुम्बुल—, सज्जाद बहुत ही बीमार हैं, ज़रा एकबार इन्हें देख जाओ।"—यह इश्तिहार जो दिलवाने कहा था, सो दिया गया?

अब्बास। जी हां, इस इश्तिहार को भी छपवाये तो कई एक दिन हो चुके। कहां, उस से भी तो नहीं आईं?

सज्ज़ाद । अब्बास, हमें मालूम होता है कि सुम्बुल अब इस दुनिया में नहीं है। हमलोगों की कोशिश अब बिलकुल लाभूद है।—अब्बास, सुम्बुल को मैं किस क़दर प्यार करता था, मैं खुद ही नहीं जानता था।—हाय, अब हमारी आंख खुली। और देखो, मुझे ऐसा मालूम होता है कि सुम्बुल भी मुझे वैसा ही प्यार करती थी। तुम लोगों ने शायद न ख़याल किया हो, इधर वह हमारे नज़दीक बहुत देर तक नहीं बैठती, मुझे "आप" "आप" कहती, मैं उसकी तरफ़ देखता तो शरमा के मुंह नीचा कर लेती। और अक्सर कहा करती कि हमें कुछ कहना है, लेकिन शर्म से कोई बात खुल के कहती नहीं थी।

अब्बास। अगर ऐसा होता, तो फिर वह चली क्यों जातीं?

सज्ज़ाद। मैं नहीं कह सकता कि क्यों चली गई। मालूम होता है शर्म से।—हाय, मैं क्या उस वक़्त आया था! इतना देख सुन के भी नहीं समझ सकता था। मगर भाई, हो न हो सुम्बुल अब ज़िन्दे नहीं है। क्यों कि ज़िन्दे होती तो हमारी बीमारी का हाल सुन कर ज़रूर ही आती।

एक अख़बार लिये एक नौकर का प्रवेश।

नौकर। हकवहा ई कागद दे गया है।

[नौकर गया।

अब्बास। (अख़बार थोड़ी दूर तक पढ़ लेने के बाद एक जगह देख कर अचानक से) हैं, यह क्या!

सज्ज़ाद। क्या, क्या?

अब्बास। नहीं, कुछ नहीं। एक लड़का कूए में डूब के मर गया, वही पढ़ रहा हूं।

सज्जाद। नहीं, कुछ और बात है। तुम्हारा मुंह देख के मुझे शक होता है। मुझे दो, मैं देख लेता हूं।

अब्बास। नहीं, नहीं, यह आप क्या देखियेगा?

सज्जाद। आः दो भी। (अब्बास के हाथ से अख़बार का छीन के पढ़ना, और ग़श खा के गिर जाना।)

अब्बास, गुलशन। हाय, हाय, क्या हुआ, यह क्या हुआ!

(ग़श दूर करने की कोशिश।)

गुलशन। (रोके) ए भइया, ए भइया, हाय, हाय जवाब क्यों नहीं देते? (रोना।)

अब्बास। कोई ख़ौफ़ की बात नहीं है, कोई ख़ौफ़ की बात नहीं है। (पंखा झलना और आंख पर पानी छिड़कना।)

(सज्जाद। का आंख खोलना और होश में आना)

सज्जाद। भाई, मैंने तो पहले ही कहा था कि सुम्बुल अब इस दुनिया में नहीं है। अगर होती। तो ज़रूर हमारी बीमारी का हाल सुन के आती (रोरो के अख़बार पढ़ना।) "जुमे की सुबह के वक़्त आठ बजे सुम्बुल नाम एक नौजवान लड़की की लाश एक कूए में मिली है। क़ातिलों का अभी तक कोई पता नहीं लगा है। मजिस्ट्रेट साहिब ने लाश को दफ़न करने का हुक्म दे दिया।"

गुलशन। (रोके।) हाय आपा, मुझे छोड़ के कहां चली गईं? आपा, छाती फटी जाती है। (रोना।)

सज्जाद। अब्बास, गुलशन को ज़रा उधर ले जा कर समझाओ बुझाओ। मुझ से यह नहीं देखा जाता।

[अब्बास गुलशन को ले गया।

सज्जाद। (रोरो के) हमारे लिये दुनिया सूनी हो गई।—अब यहां रहना फ़ज़ूल है।—अब मैं मुल्कों की सैर करूंगा।—उफ़! ख़ुशी हमें मकान पर नहीं मिलने की। परदेस में क्या सुम्बुल को भूल जाऊंगा! यह उम्मीद हमारी फ़ज़ूल है। हाय, हाय, तब क्या करूं। हाय वह अक्लमन्द होशयार नेक मिज़ाज सुम्बुल कहां चली गई!—सुम्बुल मैं तुझे प्यार करता था, अपनी जान से भी ज़ियादे प्यार करता था।—हाय सुम्बुल कुछ दिन तो और बचती!—अब रोना भी फ़ज़ूल है।—है है, मुझे अब इस दुनिया में कुछ नहीं भाता। ज़रूर बाहर ही कहीं निकल जाना चाहिये। आज ही जाऊंगा, अभी जाऊंगा।—अगर किसी से कहूंगा तो वह लोग जाने न देंगे। (उठ कर कपड़ों का पहिनना) मगर गुलशन से वादा किया है—

(एक नौकर का प्रवेश।)

नौकर। मीयां, को दो एक आदमी आया है, कहे है कि आप से कुछ कहे को है।

सज्जाद। अः जा, जा, अब्बास के पास ले जा।

(नौकर गया, और तुरत लौट आया।)

नौकर। नहीं मीयां, ऊ कहे है कि बड़ी ज़रूरी बात है, आप को छोड़ के और किसी से नहीं कहेगा।

सज्जाद। अ: क्या बला है, जा बुला ले।

[नौकर गया

(एक आदमी का प्रवेश।)

सज्जाद। क्या काम है? जल्दी बताइये।

आदमी। जनाब, मैं बड़ी दूर से थका चला आता हूं। इतनी जल्दी कीजियेगा तो मैं नहीं कह सकूंगा।

सज्जाद। ख़ैर कहिये, मगर जहां तक मुख़्तसर में मुम्किन हो, कहियेगा।

आदमी। फिर वही जल्दी।

सज्जाद। खैर, क्या कहना है जल्दी कहिये।

आदमी। फिर जल्दी।

सज्जाद। अच्छा, कहिये।

आदमी। (एक अख़्बार निकाल के) इस अख़्बार में आपने कोई इश्तिहार छपवाया था?

सज्ज०। हां, तो क्या उसका?

आ०। किसी औरत के बारे में?

सज्ज०। हां, हां, तो फिर क्या उसका? जो कहना हो सो जल्दी कहिये।

आ०। ले देखिये, फिर वही जल्दी।

सज्ज०। (ठंडी सांस लेना और आंसू पोंछना।) हम को उस का सारा हाल मालूम हो चुका है।

आ०। क्या मालूम हुआ है?

सज्ज०। (वह अख़्बार जिसे नौकर ने लाके दिया था, वही

आदमी के हाथ में दे के) लीजिये, देख लीजिये । (आंसू पोंकता है ।)

आ० (पढ़के और ज़रा मुस्कुराके) जनाब, यह ख़बर झूठी है । जब कोई ख़बर नहीं मिलती तब अख़बार वाले अक्सर झूठी ख़बरें भी छाप देते हैं ।

सिज्जा० । (घबरा के) तो क्या साहब, यह ख़बर झूठी है ? आप को किस तरह मालूम हुआ ?

आ० । मुमकिन है कि झूठ न भी हो । क्यों कि जिस के बारे में मैं कहता हूं, वह शायद कोई दूसरी सुम्बुल हो ।

सज्जा० । ऐं साहब, आपने मेरी सुम्बुल को देखा है ? वह क्या अभी तक ज़िन्दे है ? वह कहां है ?

आ० । (उठके) जनाब, मैं रुख़सत होता हूं । मैं इतनी जल्दी में नहीं कह सकता ।

सज्जा० । (उस के हाथ थांभ के) साहब, ज़रा बैठ जाइये । आप जो मांगें वही मैं दूं । पहले इस सवाल का जवाब दीजिये कि आपने क्या मेरी सुम्बुल को देखा है ?

आ० । अच्छा, पहले रुपये दीजिये । दो हज़ार रुपये का जो इश्तिहार दिलवाया था बिलफ़ेल वही उसी क़दर दें ।

सज्जा० । इस वक़्त तो इतने रुपये नहीं होंगे । आप को क्या इसी वक़्त ज़रूरत है ?

आ० । हुज़ूर, मुझे इसी वक़्त ज़रूरत है ।

सज्जा० । ख़ैर तो लीजिये ।—रुपये तो इतने नहीं हैं, मगर मैं किसी तरकीब से पूरा देता हूं । (बक्स खोल कर) यह लीजिये,

सोने की घड़ी ओर चेन। इन दोनों के दाम ८००) रुपये हैं। यह लीजिये एक ५००) का नोट लीजिये। यह लीजिये, २००) रुपयों का एक नोट ओर लीजिये। ओर यह १३०) रुपयों के खुदरे नोट ओर लीजिये। सब मिला के १६३०) रुपये हुए। यह लीजिये २००) नक़्द ओर लीजिये। १८३०) हुए। अब क्या दूं? अब तो यहां कुछ नहीं है। (सोच कर) अच्छा सब्र कीजिये (अल्मारी में से एक छोटा सा बक्स निकाल के) कालेज में जब पढ़ता था तो ये चार तमग़े मिले थे। (आह भर के) इन्हें देते ज़रा अफ़्सोस मालूम होता है।—उं हूं जब सुम्बुल ही नहीं है तो फिर इन तमग़ों को रख के क्या करूंगा! लीजिये इन चारों तमग़ों को भी लीजिये। इन चारों की क़ीमत २००) रुपये हैं। अब तो २००० रुपये से भी ऊपर हो गये। अब बताइये सुम्बुल के बारे में आप क्या जानती हैं?—मगर जो आप कहेंगी, वह सच है या झूठ यह क्यों कर मुझे मालूम होगा?

आद०। अल्बत्ते, जो मैं कहूंगा, उसे सच साबित भी कर दूंगा। अगर साबित न कर सका तो अपना रुपया फेर लीजियेगा, और क्या?

सज्ज०। ख़ैर तो कहिये।

आ०। वह जिस दिन आप के यहां से निकलीं, उस दिन आधी रात तक बराबर फिरती ही रहीं। आख़िरश एक दो बजते बजते किसी शख़्स के बाग़ में पहुंचीं। वहां जा कर क्या देखती हैं कि कई एक आदमी साथ बैठ के शराब पी रहे हैं। उन को देखते ही बीबी सुम्बुल ने चाहा कि वहां से भाग जावें मगर उन मतवालों ने

देख लिया था। ग़रज़ यह कि उन मतवालों ने उन का पीछा किया और उन्हें पकड़ लाये।

सज्ज॰। उसके बाद, उसके बाद?

आद॰। पकड़ ला कर उन्हें—उन लोगों ने बहुत बुरी बुरी बातें कहीं।

सज्ज॰। (उठके) जनाब, हो चुका बस हो चुका। अब आगे और मैं नहीं सुनना चाहता। उन मतवालों का ठिकाना बताइये मैं गुस्से से कांप रहा हूं।

आद॰। पहले बातें तो सब सुन लीजिये। मतवालों से कुछ बन न पड़ा।

सज्ज॰। (खुश हो के) वह उन के हाथ से बच गईं थीं?

आद॰। जी हां, अपने गले पर छुरी चला के।

सज्ज॰। (बैठ के) किस तरह, कैसे—क्या कहा?

आद॰। उन्हों ने फ़िकरा दे कर उन्हीं मतवालों से एक छुरी मंगवाई, और गले पर चला ली।

सज्ज॰। खुद-कुशी की? (आह भर के, और आंसू पोछ के) क्यों साहब फिर अभी आपने क्यों कर कहा था कि वह मरी नहीं हैं?

आद॰। मआज़ अल्लाह, मैं ने कब कहा साहब कि यह मरी नहीं हैं?

सज्ज॰। आप के तर्ज़ गुफ़्तगू से आप का यही मतलब मालूम होता था।

आद॰। इस में आप का इख़्तियार है जैसा जी चाहे "मालूम" कर लीजिये। आप आंखें बन्द कर के "मालूम" कीजिये

कि सुम्बुल आप के सामने खड़ी हैं, तो क्या कोई आप का हाथ रोकेगा? खैर साहब सुम्बुल आप को कौन होती हैं? एक अदनी औरत के लिये इतना खर्च और इतनी खोज खबर। अल्लाह की पनाह!

सज्ज०। (गुस्सा होके) इस से आप को क्या काम? आप जिस बात के कहने को आये हैं वही कहिये।

आद०। उन्हों ने अपने गले पर छुरी चला ली।

सज्ज०। सुम्बुल इस दुनिया से रुख़सत हो गई, तो खैर अब उस का हाल सुन के क्या होगा? (दोनों हाथों से मुंह ढांक लेना।)

आद०। लीजिये, आप को फिर यह किस ने कहा कि सुम्बुल इस दुनिया से रुख़सत हो गई?

सज्ज०। (उठ के उस आदमी के दोनों हाथ थांभ के) जनाब मैं आप के पांओं पड़ता हूं, क्या माजरा है सच सच बतला दीजिये। मेरे इस सवाल का जवाब एक बारगी दीजिये कि वह जीती हैं या मर गईं।

आद०। लीजिये अब मैं रुख़सत होता हूं। मुझ से कोई बात एक बारगी नहीं कही जा सकती। मुझे इस तरह बोलने का मुहावरा नहीं है।

सज्ज०। खैर, जैसा आप को मुहावरा हो वैसा ही कहिये। वल्लाह, अब मैं एक लफ़्ज़ भी मुंह से न निकालूंगा।

आद०। जब कि उन्हों ने अपने गले पर छुरी चला ली, तब उन मतवालों ने उन्हें धर पकड़ के एक थाने पर फेंकवा दिया। दूसरे रोज़ खूब नूर के तड़के उसी तरफ़ से एक बुढ़िया चली जाती

थी। उस बुढ़िया ने भी उन्हें बहुत देर तक अच्छी तरह देखा भाला तो मालूम किया कि यह निरी लाश ही नहीं है, इस में अभी तक जान भी है। गरज़ वह बुढ़िया उसे घर ले जाके बहज़ार हिफ़ाज़त और ख़िदमत उसे होश में लाई। गले में ज़ख़्म ज़रा गहरा था, बहुत ख़ून के निकल जाने से बेहोशी इतनी देर तक रही।

सज्जा०। भाई वल्लाह, तुम ने वह खुश-ख़बरी सुनाई है कि इस वक्त तुम्हें जो दूं वह थोड़ा है!

आद०। ज़रा अख़ीर तक पहले आप सुन लेवें, तब मार के अगर निकाल न दिया जाऊं तो अपने तईं बड़ा खुश-नसीब समझूं। उस बुढ़िया के अफ़ज़ल नाम एक ख़ूबसूरत जवान बेटा है। वह आप की सुम्बुल को देखकर पागल हो गया। उमर उस की बरस २२, २३ एक की होगी। एक रोज़ अपनी मा से कहने लगा कि "अम्मा, अगर तुम उस लड़की से मेरा ब्याह न कर दोगी तो क़सम खुदा की मैं गले में फांसी लगा के मर जाऊंगा।" गरज़ चार नाचार, अफ़ज़ल और अफ़ज़ल की मा की ज़बरदस्ती से सुम्बुल ने अफ़ज़ल से ब्याह कर लेना कबूल किया। और हकीक़त भी यों ही है कि जिस ने जान बचाई, भला उस की बात क्यों कर टाली जावे।

सज्जा०। तो उस से उन की ब्याह कर लेना मन्ज़ूर हुआ?

आद०। नहीं तो क्या मैं आप से झूठ कह रहा हूं? मुझको भी आप ने अख़बार समझ लिया क्यों?

सज्जा०। (ठंडी सांस ले के) ब्याह कब हुआ?

आद०। अभी तक तो नहीं हुआ है।

सज्जा०। (खड़े हो के) अभी तक नहीं हुआ है? देखो, मैं

तुम्हें १०००० रुपये दूंगा, हमारे पास जो कुछ है, मैं सब का सब तुम्हें दे दूंगा, अगर तुम मुझे उन के पास ले चलो, या यह बता दो कि वह कहां हैं ?

आद०। (सर हिला के) यह हमारे इख़्तियार के बाहर है।

सज्ज०। (बैठ के, अफ़सोस के साथ) क्यों, क्यों ?

आद०। लीजिये, पढ़ के देख लीजिये। (हाथ में ख़त का देना।)

सज्ज०। अहा यह तो मेरे ही नाम का ख़त है, और देखता हूं हर्फ़ भी उसी के हाथ का है। (ख़त का जल्दी खोलना और पढ़ना।)

"इस ख़त के ले जाने वाले से हमारा सारा हाल मालूम कीजियेगा। कुछ ख़याल मत कीजिगा। गुज़श्ते के लिये अफ़सोस करना फ़ज़ूल है। एक हफ़्ते के अन्दर ब्याह होगा। आज मैं कश्ती पर सवार हो के दूसरे गांव को जाती हूं। किस गांव में—इस की ख़बर इस आदमी को नहीं है। कुसूर मुआफ़ कीजियेगा, और ज़ियादे क्या लिखूं ?

हमेशे की कमबख़्त

सुम्बुल।"

(आंसू बहाता हुआ) ख़त नहीं पढ़ता तो अच्छा होता। सुम्बुल, तू बड़ी बेरहम है। (नीचे मुंह किये रोना।)

आद०। जनाब, तो मैं अब आदाब अर्ज़ करता हूं। देखिये, मुझ पर ख़फ़ा न हूजिये। ख़बर तो बेशक ख़राब है, मगर क्या करूं, कहना ज़रूर था। अगर यह मैं पहले से जानता होता कि

ख़त के पढ़ने से आप इतने उदास हो जायेंगे तो वल्लाह ख़त न देता । ख़ैर तो ह—न रु—प—यों को ले लूं ? यों कहिये तो न लूं । आप को ग़मगीन देख के मेरी आंखें भी भरी आती हैं । मगर बहुत दूर से चला आता हूं, राह ख़र्च भी बहुत हुआ है, अगर कुछ मिहरबानी कीजिये तो—

सज्जा० । तो इस में आपका क़ुसूर क्या है ? आप रुपयों को ले जाइये, सब ही ले जाइये । जितने के लिये इश्तिहार दिलवाया है, उतना तो ज़रूर ही देना पड़ेगा ।

आद० । यों आप की ख़ुशी हो तो उन तमग़ों को रख लीजिये, क्यों कि उन के अलग करने में आप को ज़रा अफ़सोस भी हुआ था ।

सज्जा० । (आंख बंद कर के) जी हां, अफ़सोस तो हुआ था, मगर अब नहीं है । (आह भर के) सुम्बुल जीती है, हमारे लिये यही ख़ुश-ख़बरी है । इस ख़ुश-ख़बरी के लिये २००० रुपये कुछ बहुत नहीं हैं । अगर उन का आप पता बता दें, तो वल्लाह क़सम कलामुल्लाह की इस का चौगुना इनआम दे सकता हूं ।

आ० । मआज़ अल्लाह मियां, एक औरत का इतना दाम ! आप अमीर हैं आप को सब छजता है । अच्छा साहब, सुम्बुल से भी ज़ियादे ख़ूबसूरत और अक़्लमंद लड़की जो ला दूं, तो क्या आप ८००० देंगे ? क्यों नहीं देंगे, आप को तो और अच्छा है, पुरानी चीज़ के बदले नई चीज़ मिलती है ।

सज्जा० । (बड़े ग़ुस्से से) लालची, गुनहगार, तू अपना सा सब को समझता है ? सारे जहान की सब औरतों को जमा कर तब भी सुम्बुल की बराबरी कोई नहीं कर सकेगा । (चित्त को स्थिर

कर के) जाओ, रुपये ले जाओ। देखो मुझे गुस्सा न दिलाओ। (जी में) इतना ख़फ़ा होना लाज़िम न था। इस की आंखें डब-डबा आईं। (आदमी का हाथ थांभ के) भई, देखो कुछ ख़याल मत करना। गुस्से में बहुत कुछ भला बुरा मुंह से निकल गया है। मैं सुम्बुल को कितना चाहता था, और अब भी कितना चाहता हूं, वह तुम नहीं समझ सकते हो। (आंसू का पोछना।)

आद०। (आंसू पोछ के) जी, मैं तो एक गरीब आदमी हूं, जो जी में आवे, सो कह लीजिये। मैं क्या करूंगा। तो खैर अब जाता हूं। (जाना चाहता है) ला होल वला कूवत, अच्छी याद आ गई। उन्हों ने एक चिट्ठी और दी है, देखिये तो। (चिट्ठी का देना।)

सज्जा०। एक चिट्ठी और! (आह भर के) नहीं अब इसे नहीं पढ़ूंगा। इतनी हिम्मत नहीं होती। इस में न मालूम कौन सी और बुरी ख़बर है।

आद०। "हाथ कंगन को आर्सी क्या?" पढ़ के देख तो लीजिये।

सज्जा०। खै—र (चिट्ठी पढ़ता है।)

"प्यारे सज्जाद, मैं तुम्हारी ही हूं। तुम्हारे सिवा और किसी को नहीं जानती। मैं अब जल्द ही आऊंगी। अब कुछ परवा नहीं। अब्बास और गुलशन कैसे हैं?"

तुम्हारी सुम्बुल।

(मुंह नीचा कर) हमारा सर घूम रहा है—मुझे कुछ भी समझ नहीं पड़ता। मैं जागा हूं, या सोया हूं।

आद०। (आवाज़ बदल के) जनाब, तो मैं अब रुख़सत होता हूं। आप ने तो मुझे निकाल ही दिया था।

सज्ज०। (आदमी के मुंह की तरफ़ एक बार देख के) है है मैं क्या ख़ब्ती हो गया हूं? हैं, यह क्या माजरा है! हम ने अभी सुम्बुल की आवाज़ कहां सुनी।

(आदमी का भेस बदलना, और सुम्बुल हो जाना)

सुम्बुल। (मुस्कुराके) जनाब, तो मैं अब जाती हूं।

सज्ज०। हैं, फिर वही आवाज़! (मुंह उठाके) यह क्या? (सुम्बुल को दोनों बाज़ुओं से लपटाके) जादूगरनी, बेरहम, बेदर्द! (रोता है।)

सुम्बुल (ज़ोर से रोके) सज्जाद, प्यारे सज्जाद, मैं तुम्हारी हो हूं, प्यारे।

सज्जाद। फिर इस वक्त से इस तरह उठा बिठा क्यों रही थी, सुम्बुल?

सुम्बुल। लो, मैं ने किस वक़्त उठाया बिठाया?

सज्ज०। क्यों उस वक़्त से यह क्या हो रहा था? कभी उम्मीद दे देके बहिश्त तक चढ़ा देती, और कभी निरास करके दोज़ख़ में पटक देती और फिर कभी गुस्से से अंधा बना देती। (सुम्बुल का हाथ पकड़के) सुम्बुल नावाक़िफ़ियत में मैं ख़फ़ा हुआ था, तुम्हें अभी उसका रंज है?

सुम्बुल। (हंसके) हुं-ऊ, ख़ूब।

सज्ज०। तब रोई थी क्यों?

सुम० । तुम हमें इतना प्यार करते हो यह जान करके ।

सज्ज० । उसके बाद फिर तुम ने मुझे क्यों इतना सताया ? जाओ तुम से मैं नहीं बोलूंगा ।

सुम० । (हंसती हुई खड़ी हो के) न बोलोगे, मत बोलो, मेरी बला से । जाती हूं, उसी अफ़्ज़ल से मैं ब्याह कर लेती हूं ।

सज्ज० । (सुम्बुल को पास बिठाके, हंसता हुआ) सुबहान अल्लाह, बातें बनाना तो खूब सीख आई हो ? खैर यह तो बताओ कि तुम ने यह जो बंदिश बांधी थी, उस में कौन कौन बातें सच थीं, और कौन कौन झूठ ?

सुम्बुल । वह बुढ़िया हमें उठा के ले आई, और उस ने बड़ी खबरदारी से हमारी हिफ़ाज़त की, इतना तो सच है, और उसे अफ़्ज़ल नाम न कोई लड़का है, और (शरमा के) न कभी उस ने मुझ से शादी करना चाहा ।

सज्ज० । (प्यार से) तुम्हारे लिये कैसी कैसी तक्लीफ़ें उठाईं, तुम्हें कितना ढूंढवाया, और आप भी ढूंढा, पर तुम न मिलीं । सुम्बुल, तुम कहां थीं ? तुम क्यों नहीं आती थीं ?

सुम्बुल । (रोके) सज्जाद बेवकूफ़ी की वजह से कसूर हुआ, मुआफ़ करो । तुम्हें ऐसी ऐसी तक्लीफ़ें उठानी पड़ी थीं, मुझे मुतलक़ मालूम न था । उसी बुढ़िया के मकान में मैं थी कि हकीम ने जिस काग़ज़ से दवा की पुड़िया बांध के भेजी थी वह अख़बार का एक टुकड़ा था । इत्तिफ़ाक़न उस में तुम्हारा इश्तिहार मैं ने देखा । उस इश्तिहार को देख के मुझ से न रहा गया । उसी वक़्त की उठी उठी बराबर चली आती हूं ।

सज्ज०। फिर मर्द के भेस में क्यों आईं ?

सुम्बुल। उसी बुढ़िया की सलाह से।—और कुछ अपनी राय भी ऐसी ही हुई।

सज्ज०। तो फिर यहां आके यह ढकोसला क्यों फैलाया ?

सुम्बुल। सिर्फ़ तुम्हारे दिल का इम्तिहान के लिये, अगर तुम्हारे दिल को किसी और तरह का पाती तो लौट जाती।

सज्ज०। खैर तो अब इम्तिहान ले लिया न ? या फिर भी कभी भाग जाओगी ?

सुम्बुल। देखना, आज ही भागती हूं।—भेस बदल के आने की यह भी एक वजह थी कि मैंने सोचा कि ख़ुदा नख़ास्ते अगर तुम सच मुच बीमार होओ, तो हमारे एक बारगी आ जाने की खुश-ख़बरी सुनके मुम्किन है कि बीमारी बढ़ जावे। (मुस्कुराके) खैर तो अब इस बात को जाने दो, यह बताओ कि खुश-ख़बरी के सुनाने से चौगुना इनआम देंगें, जो तुम ने कहा था सो अब क्या देते हो।

सज्ज०। (प्यार से सुम्बुल का हाथ पकड़के) सुम्बुल खुश-ख़बरी के सुनाने के लिये मैं ने चौगुना देना मंज़ूर किया था न कि तुम्हें पाने के लिये। सुम्बुल तुम तो हमारी ही हो फिर अपनी चीज़ भी कोई क़ीमत देके ख़रीदता है ?

सुम्बु०। (नेपथ्य की तरफ़ देखके) गुलशन आती है, तुम ज़रा चुपचाप बैठे रहो, देखें क्या करती है। (सुम्बुल का एक तरफ़ बैठना।)

गुलशन। भइया, दीवान जी ने कहला भेजा है कि आपा

जीती हैं और उनका हाल सुनाने के लिये तुम्हारे पास एक आदमी भी आया है। उस आदमी ने क्या क्या कहा था?

सज्जा०। बहुत बुरा हाल है। यह औरत भी वहीं से आई है। इसी से सब पूछ लो।

गुल०। (सुम्बुल के पास जाके) क्यों बुआ, आपा की क्या ख़बर—(आधी जीभ मुंह के बाहर और आधी अंदर करके तअज्जुब से) हैं यह क्या? यही आपा हैं। आपा, मुझे पकड़ो मुझे पकड़ो, हमारा सर घूम रहा है। (सुम्बुल का पास आना, और गुलशन का उस के गले में लपट जाना।) तुम इतने दिनों तक कहां थीं, आपा? हाय हाय, हम लोग रोते रोते अंधे न हो गये यही तअज्जुब समझो। मैं तेरी छोटी बहन हूं, मुझे छोड़ते तुझे ज़रा मया न आई? (रोना।)

सुम्बुल। (गुलशन का हाथ थांभके) बहन, अब ज़ियादे न शर्माओ। जो हुआ सो हुआ। क़सम अल्लाह की अब ऐसा हरगिज़ न करूंगी।

गुलशन। ऐसा करोगी तो अब करने कौन देता है? अब मैं तुम्हें अपनी आंखों में रक्खूंगी। देखो मैं तुम्हें ज़ंजीर में बांधके रक्खूंगी।

सुम्बुल। (सज्जाद की तरफ़ एक नज़र देखके अस्फुट स्वर से) अब तुम्हारे बांधने की ज़रूरत नहीं। ज़ंजीर तो पैरों में पड़ चुकी।

गुल०। (ख़ुश होके) वल्लाह सच कहो। (फिर सुम्बुल के बदन से लपटना।) जाऊं, सब को ख़ुशख़बरी सुना आऊं।

सुम्बुल। (मुस्कुरा के) सब को, यानी अब्बास को।

सज्जाद । तुम्हें क्यों कर मालूम हुआ ?

सुम्बुल । मुझे मालूम है ।

[अब्बास के साथ गुलशन का प्रवेश ।]

अब्बास । आदाब अर्ज़ है, भाभी साहबा, फ़िदवी को पहचानती हो ? (झुकके सलाम करना)

सुम्बुल । (अब्बास के पास जाके, और उस का हाथ थांभके) भाई अब्बास, तुम्हारे पांव पड़ती हूं, मुझे अब ज़ियादे न शर्माओ । आपने किये पर मुझे खुद इतनी शर्म है, कि भर आंख मैं किसी को देखती तक नहीं ।

अब्बास । देखो नाहक़ तुमने खुद भी तक्लीफ़ उठाई होगी, और हम लोगों को भी तक्लीफ़ दी । (तअज्जुब से) जो एक बात अभी सुनी, वह कब होगी ।

(सुम्बुल ने लाज से सिर नीचा कर लिया ।)

सज्ज० । (मुस्कुरा के) उस बारे में हम तुम दोनों मिल के आज सलाह करेंगे ।

गुलशन । ए आपा, तुमसे एक बात पूछनी है, यानी तुम्हें तो मैं 'आपा' 'आपा' कहती हूं, और भइया तो भइया है ही है । और जो कोई मुझ से पूछे कि तुम्हारे भइया की किस से शादी होने वाली है, तो मैं क्या जवाब दूंगी कि आपा से ?

सु० । अच्छा ठैरो देखो अभी मैं तुम्हारा मुंह बन्द करती हूं । (सज्जाद से एक तरफ़ कान में सलाह करना ।)

सज्ज० । (खुश होके) अच्छा अच्छा । (अब्बास और गुलशन का हाथ मिलाके) भाई अब्बास, गुलशन को मैं ने तुम्हारे